अमृतवाणी
सतिगुरु रविदास महाराज जी
(स्टीक)

प्रकाशक : रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर जालन्धर

टीकाकार : संत सुरिन्दर दास बावा जी

सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधूप मखीरा।

ऐसा चाहूं राज मैं जहाँ मिलै सबन को अन्न।
छोट बड़े सभ सम बसै रविदास रहे प्रसन्न।।

अमृतवाणी

सतिगुरु रविदास महाराज जी

(स्टीक)

निशान साहिब

रविदासीया धर्म

प्रकाशक

रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर जालन्धर।

अमृतवाणी
सतिगुरु रविदास महाराज जी
(स्टीक)

प्रकाशक
रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान **काहनपुर जालन्धर**

© सभी अधिकार प्रकाशाधीन हैं।

टीकाकार:

संत सुरिन्दर दास बावा जी

चेयरमैन:- रविदासीया धर्म प्रचारक संत समाज सोसाइटी (रजि.)
चेयरमैन:- अंतराष्ट्रीय जगतगुरू रविदास साहित्य संस्था (रजि.)

पहली वार : 5000
दूसरी वार : 5000

मूल्य ₹ 50/-

रविदासीया धर्म के नियम

(1) हमारा रहबर : सतगुरु रविदास महाराज जी

(2) हमारा धर्म : रविदासीया

(3) हमारी धार्मिक पुस्तक : अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी

(4) हमारा कौमी निशान साहिब :

(5) हमारा सम्बोधन : जै गुरुदेव

(6) हमारा महान् तीर्थस्थान : श्री गुरु रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू. पी.)

(7) हमारा उद्देश्य : सतगुरु रविदास जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार। इसके साथ-साथ महाऋषि भगवान वालमीक जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु कबीर जी, सतगुरु त्रिलोचन जी, सतगुरु सैन जी तथा सतगुरु सधना जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना। सभी धर्मों का सम्मान करना, मानवता के साथ प्रेम करना तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करना

निशान साहिब
रविदासीया धर्म

सतगुरु रविदास महाराज जी के जीवन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य

प्रकाश दिवस =

माघ सुदी पंद्रास **1433** विक्रमी सम्वत् सन् **1377** ई0

जन्म स्थान =
ग्रामः सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू0 पी0)

माता-पिता जी का नाम =
पिता जी- पूजनीय संतोख दास जी,

माता जी- पूजनीय कलसी देवी जी

दादा-दादी जी का नाम =

दादा जी- पूजनीय कालू राम जी,

दादी जी- पूजनीय लखपती जी।

सुपत्नी एवं सपुत्र का नाम =

सुपत्नी पूजनीय लोना देवी जी,

सपुत्र पूजनीय विजय दास जी।

ब्रह्मलीन =
आषाढ़ की संक्रांति **1584** विक्रमी सम्वत्
(**1528** ई0) बाराणसी में।

समर्पण

जगतगुरू रविदास महाराज जी के 641 वें आगमन पर्व एवं रविदासीया धर्म के 9 वें स्थापना दिवस को समर्पित

दो शब्द

प्रेम पंथ की पालकी रविदास बैठियो आय।
सांचे सामी मिलन कूं आनंद कह्यो न जाय।।

धन्य धन्य जगत्गुरू रविदास जी महाराज जिन्होंने इस संसार मे सभी प्राणियों को एकता, ममता, भाईचारे , मानव-प्रेम, संतो की संगति करने तथा हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश प्रदान किया। जहाँ जगत्गुरु रविदास जी महाराज ने सदियों से पीड़ित समाज में आकर इसे सभी बंधनों से मुक्त किया, वहीं मानव विरोधियों को भी सत्य उपदेश प्रदान
किया।

''सतसंगति मिलि रहीए माधउ जैसे मधुप मखीरा"।

इस तरह सतसंगति के उपदेश के द्वारा उन्होंने विश्व भाईचारे का पावन उपदेश दिया और पूरे विश्व को बेगमपुरा वतन बनाने का संकल्प दिया ऐसे महान् क्रांतिकारी, जगत्गुरू रविदास जी महाराज का आगमन माघ सुदी पंद्रास 1377 ई° (1433 वि° संवत) में सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी मे पिता श्री संतोख दास जी तथा माता श्रीमती कलसी देवी जी के घर में हुआ। समाज में समानता स्थापित करने के लिए गुरू जी ने मकर संक्रांति पर अपना कंधा चीर कर चार युगों के प्रतीक चार जनेऊ दिखाए और सूत के जनेऊ को उतार दिया। बैसाखी के ऐतिहासिक पर्व के अवसर पर आप जी ने गंगा घाट पर शिला को पानी में तैराया तथा राजा कुम्भा एवं रानी झालां बाई के दरबार मे अनेकों रूप धारण कर संगत-पंगत की प्रथा प्रारम्भ की। आप जी ने अपने जीवन का अधिकांश समय देश–विदेश में उदासियां करते हुए, सभी जीवों को सत्य मार्ग पर चलने का उपदेश देते हुए व्यतीत किया। असंख्य राजा, महाराजा और सभी वर्गों के लोग आपके पावन चरणों में आकर नतमस्तक हुए। इस प्रकार मानवता का उद्धार करते हुए आषाढ़ की संक्रांति (1528) को आप सणदेही बनारस में ज्योति–जोति समाए। जगत्गरू रविदास जी महाराज जी को भक्ति का सिरमौर (शिरोमणि) समझते हुए सतगुरू कबीर जी फरमाते हैं।

साधन में रविदास संत है, सुपच ऋषि सो मानिया।
हिंदू तुरक दुई दीन बने है, कछु नहीं पहिचानिया।।

अर्थात् संतजनों में महान् संत सतगुरू रविदास जी हैं, जिन्हे दुनिया एक महान् संत ऋषि मानती है । तात्कालिक समय के हिन्दु व मुस्लिम दोनों ही उनके समक्ष नत्मस्तक हुए और उन्होंने श्री गुरू रविदास जी को प्रभु समझ

कर जाना ।

जगत्गुरू रविदास जी के मानवता के प्रति उपकार को, अपनी वाणी द्वारा संत पीपा जी इस प्रकार उच्चारण करते हैं:।

जे कलि रैदास कबीर ना होते, लोक वेद अरू कलिजुग
मिलि कर भगति रसातल देते।

आर्थात् यदि सत्गरु रविदास जी और सत्गुरु कबीर जी यथा समय अवतरित न होते, तो तत्त्कालीन उच्च्य वर्ग , वेद और कल्युगी विचारधारा ने, भक्ति को पाताल में दफन कर देना था।

रविदास चमारू उसतति करे
हरि कीरति निमख इक गायि।।
पतित जाति उतमु भइया
चारि वरन पए पगि आयि।।

सत्गुरू राम दास जी फरमाते हैं कि सत्गुरू रविदास जी ने एक ओंकार परमात्मा की ऐसी भक्ति, आराधना एवं उपमा की, कि वह परमात्मा का ही रूप हो गए। नीची समझे जाने वाली जाति में जन्म लेने के बावजूद भी, उनकी भक्ति और आध्यत्मिकता के कारण, चारों–वर्णों के लोग उनके चरणों में नत्मस्तक हुए।

सत्गुरू अर्जुन देव महाराज जी, आप जी की उपमा करते हुए फुरमाते हैं:-

ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी
रविदास ठाकुर बणि आई।।

अर्थात् ऊँच से ऊँच समद्रशष्टि वाले सतगुरू नामदेव जी हुए हैं और सतगुरू रविदास आप इस संसार में प्रभु बनकर आए।

जगत्गरू रविदास जी अपनी अमृतवाणी में उच्चारण करते हैं :

मेरी जाति कुट बांडला ढोर ढोवंता
नितहि बानारसी आस पासा।।
अब बिप्र परधानु तिहि करहि डंडउति
तेरे नाम सरणायि रविदासु दासा।।

अर्थात् मेरा जन्म उन लोगों में हुआ,जो बनारस के आस-पास, प्रतिदिन , मृत्त पशुओं को ढोते हैं। परन्तु मैंने प्रभु के नाम की शरण ली और आज बिप्रों के प्रधान लोग, मुझे दंडवत् नमस्कार करते हैं। जगत्गरू रविदास जी महाराज जी के

कल्याणकारी, समाजवादी, क्रांतीकारी और अध्यात्मक उपदेशों को सुनकर राजा नागर मल्ल (हरदेव सिंह), राणा वीर बघेल सिंह, राजा सिकंदर लोधी, महाराणा संग्राम सिंह (राणा सांगा)राजा चन्द्र प्रताप, राजा अलावदी बादशाह, बिजलीखान राणा रतन सिंह, महाराणा कुंभा जी, महाराणी झालां बाई जी, राजा बैन सिंह, राजा विजयपाल सिंह, महान् संत मीरा बाई जी, बीबी कर्मा बाई जी, बीबी भानमती जी, महान् संत गोरख नाथ जी सहित सभी अन्य राजे और सभी वर्गों के लोग उनके चरणों में झुके। मानवता के मसीहा डॉ0 भीम राव अम्बेडकर साहिब जी ने भारतीय संविधान की रचना, गुरू जी के पावन शब्द 'बेग़मपुरा सहर को नाउं के आधार पर की।

रविदास सोइ साधु भलो,जऊ रहइ सदा निरवैर।
सुखदायी समता गहहि सभनह मांगहि खैर।।

ऐसे ही महान् परोपकारी तपस्वी ब्रह्मज्ञानी सत्गुरु स्वामी सरवण दास जी ने गांव बल्लां की पावन धरती पर श्वास–श्वास प्रभु का सिमरन किया तथा सांसारिक जीवों को प्रभु का सिमरन करवाया। आप सदैव संगत को विद्या ग्रहण करने, माता–पिता की सेवा करने, बड़ों का सम्मान करने, छोटों के साथ प्रेम करने, संतों की संगत करने तथा हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश दिया करते थे। गांव बल्लां की ही पावन धरती पर उन्होंने डेरा का निर्माण करवाया तथा दिनांक 2 फरवरी 1964 को इस अस्थान का नामकरण "डेरा रविदासियाँ दा" का नाम देकर रविदासियों की पहचान को आगे बढ़ाया। एक बार श्रद्धालूजनों ने सतगुरु सरवण दास महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की कि महाराज जी रविदासिया कौम की गुलामी की जंजीरें कब टूटेंगी? तब सतगुरु सरवण दास जी ने फरमाया कि जब जगत्गुरु रविदास महाराज जी की अमृतवाणी एकत्रित होगी । अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा इन्होंने जगत्गुरु रविदास महाराज के पावन जन्म अस्थान की खोज की तथा आषाढ़ की सक्रांति 14 जून सन् 1965 ई° में संत हरी दास जी महाराज के कर–कमलों से उसका शिलान्यास रखवाया। संत गरीब दास जी महाराज की निगरानी में इस स्थान पर निर्माण कार्य करवा कर समाज को एक महान् तीर्थ–स्थान प्रदान किया तथा उच्चारण किया कि इस पावन तीर्थ–स्थान पर समस्त विश्व से संगत आया करेगी। संत रामानंद जी ने इस स्थान पर स्वर्ण कलश सुशोभित किए तथा स्वर्ण मंडन का कार्य आरम्भ किया।

24 मई 2009 को मानव–विरोधियों ने श्री गुरू रविदास टैम्पल वियाना में हमला किया । इस हमले के कारण 25 मई को प्रभात समय रविदासिया कौम के लिए संत रामानंद जी शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन हो गए। इस के विरोध में रविदासियाँ कौम ने पूरे विश्व मे अपनी एकता एवं शकित को प्रदशित करते हुए

रोष प्रकट किया। इसके पश्चात् जगत गुरू रविदास महाराज जी के 633 वे प्रकाश उत्सव के अवसर पर, श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीरगोवर्धनपुर, वाराणसी से जगत्गुरू रविदास महाराज जी, सत्गुरू सरवण दास जी महाराज जी और संत समाज की कृपा से हजारों की संख्या में विश्व भर मे संत समाज तथा लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में रविदासिया धर्म ऐलान किया गया रविदासिया कौम के 20 करोड़ से भी अधिक लोग इस नई पहचान को पाकर हर्षित हुए। उस रात सदी के सबसे बड़े चन्द्रमा में जगत् गुरू रविदास महाराज जी ने दर्शन देकर आशीर्वाद दिया। विश्व भर मे अमृतवाणी ग्रन्थ के प्रकाश लाखो की तादाद मे हो चुका है । अमृतवाणी ग्रन्थ की व्याख्या का अनुवाद पंजाबी, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, इटालाईन्, डच और अनेक भाषाओं मे प्रकाशित हो चुका है एवं सुखसागर गुटके अनेक भाषाओं में लाखों की संख्या में विशवभर में पहुंच चुके हैं। ''अमृतवाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी की स्टीक पुस्तक'' जगतगुरू रविदास महाराज जी और सत्गुरू सरवण दास जी महाराज की कृपा से संगत की भेंट करता हुआ प्रसन्ता अनुभव कर रहा हूँ।

गुरू चरणों का दास
संत सुरिन्दर दास बावा

‘रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान’ काहनपुर का संक्षिप्त इतिहास

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर गाँव काहनपुर जिलाँ जालन्धर मे जालन्धर से पठान्कोट जाने वाले राष्ट्रीय राज मार्ग पर स्थ्ति है। इस अस्थान की उसारी यहाँ के सरप्रस्त एवं रविदासिया धर्म के अनमोल हीरे श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी ने करबाई जिसका शिला नयास संत समाज और संगत की उपस्थिती में आदरनीय श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी, श्री 108 संत बीबी क्रिशना देवी जी (गद्दी नशनि) डेरा श्री 108 संत हरिदास महाराज जी बोपाराय कलां वालो ने अपने कर कमलो से 27 मार्च 2014 को रखा, जिसके लिए एक पलाट श्री एम°डी° मंगा सरपंच काहनपुर के परिवार की ओर से दिया गया। इस ओर इलाके की संगत में भारी उत्साह पाया जा रहा था। यही कारण है कि जगत्गुरू रविदास नामलेवा संगत की कारसेवा से वर्षों में होने वाला निर्माण कार्य महीनों में कर लिया। आज इस स्थान पर दूर–दूर से संत महापुरुष, समाजिक और धार्मिक सभायें एवं गुरू रविदास महाराज नामलेवा संगत पहुँचती है। एक छोटे से गाँव में निर्मित बुलंदियो को छूता यह अस्थान पूरे विशव में अपनी किरणे बिखेर रहा है। संगत में अधिक प्रचार और प्रसार की ज़रूरतो को देखते हुए यूरोप की संगत की ओर से इस अस्थान के संस्थापक श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी को एक सफारी गाड़ी 01–01–15 को भेट की गई। दो मंज़िला बढ़े हाल में जगत्गुरू रविदास महाराज जी के नाम से एक संगीत अकैडमी खोली गईं है, जिसमें संगीत के धनी अध्यापक हरमोनियम और तबले के साथ संगीत के ज्ञान के बारे में विशेष शिक्षा दे रहे है। जिसमे करीब 50 लड़के-लड़कियां इस अकैडमी के लाभ ले रहे है जिसका सारा खर्च श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी और संगत के सहयोग सदका किया जा रहा है। प्रचार अस्थान पर दुखी और रोगी व्यक्तियो की मदद दवाईयों के साथ की जाती है। बेरोजगार बच्चों को अलग–अलग कोरस और कित्ता मुखी व्यवसायक सम्बन्धित कोरसों से जोड़ा जाता है।

गाँव काहनपुर में बाबा पिप्पल दास जी महाराज बालक संत सरवण दास जी को साथ लेकर सबसे पहले आए। जब कुटिया बनाने के लिए नीव खोदनी आरम्भ की वहा से ड़मोही निकली महाराज जी ने कहा किसी का घर उजाड़कर अपना घर कैसे बना सकते है यह बोल कर अगले गाँव चल पढ़े और वचन किए फिर आएगे और अपना अस्थान बनाएगे श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी के

पिता श्री गुरदास राम जी बीबी गुरवचन कौर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के श्रधालू थे। इन के ग्रह पर सत्गुरू जी कई राते रूके। एक समय 1972 ई. में बीबी गुरवचन कौर बिमार हो गई। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। सत्गुरू जी आप संगत सहित सिवल हस्पताल जालन्धर जा के बीबी गुरवचन कौर की जान बचाई और वर दिया के इस पुत्र को नही रोना। तुम्हारे दो पुत्र और होगे। बीबी जी ने उस समय ही बढ़े पुत्र को सत्गुरू सरवण दास जी के चरणो में भेंट किया।

सेवा भावना की गुडती आप जी को अपने माता पिता जी से ही प्राप्त हुई थी। आप जी के आदरयोग्य माता पिता सत्गुरू सरवण दास जी महाराज जी के श्रधालु थे और सत्गुरू सरवण दास जी का पूरा आशीवाद आप जी के पिता श्री गुरदास राम जी को प्राप्त था, जिसकी मिसाल आप जहाँ दी गई है कि जिस वक्त सवामी सरवण दास जी 11 जून 1972 को ब्रहम्लीन हो गए, अंतिम संस्कार करने की त्यारी मकुम्मल थी। चिता मे देसी घी, चंदन की लक्ड़ी, धूप सम्रगरी आदि पाया जा रहा था। अग्न- भेंट करने के लिए अरदास हो चुकी थी। वहाँ पर मौजूद व्यक्तियों के मुताबिक ब्रहम्लीन स्वामी सरवण दास जी महाराज के पाँच तत्व शरीर मे से खून की धारायें निकली जो श्री गुरदास राम जी के शरीर पर गिरी। यह एक विचार योग्य बात है कि यह बूंदे श्री गुरदास राम जी के ऊपर ही कियो गिरी? और फिर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के ब्रहमलीन होने के पूरे 9 माह बाद 14 मार्च 1973 श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी का जन्म एक अध्यिात्मक सवाल खड़ा कर देता है। पाँच वर्ष की आयु में श्री 108 संत हरिदास जी महाराज बावा जी को भगवां भेष पहना कर सुच्ची गाँव से डेरा बल्लां ले आए और श्री 108 संत गरीबदास जी महाराज जी ने उच्च शिक्षा दिलवाई।

श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी के द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज और सत्गुरू सरवण दास जी महाराज की और संत समाज की कृपा से 30 जनवरी 2010ई. को रविदासियां कौम को रविदासियां धर्म का ऐलान कर अलग पहचान प्रदान की ।

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान पर एक लाइब्रेरी 'सत्गुरू सरवण दास जी महाराज' की याद में बनायी गई है ,जिस में हज़ारो की गिनती में पुस्तके है , जिस में 'दलित इतिहास' और दलित सम्बन्दी लिखार्रयों की पुस्तके रखी गई है। महान् गुरू, देशभक्तों, योद्धाओं एवं साहित्कारो से सम्बन्धित साहित्य इस लाइब्रेरी में मौज़ूद है यहा ही बस नही डॉ° अंबेडकर और अलग-अलग लाइब्रेरीयों द्वारा लिखारीयों को मुफत किताबें बांटी जाती है और आने वाले समय में एक मैगज़ीन

भी चालू की जा रही है,जो प्रक्रिया अधीन है। जगतृगुरू रविदास जी महाराज और सतृगुरू सरवण दास जी महाराज जी के मिशन का निरंतर प्रचार होता है।

बावा जी ने 2010, 2011, 2012, 2013 में कई बार यूरोप, आस्टरीया, गरीस, ईटली, फरास, जर्मन, होलैड, सपेन, अमेरीका ,कनेड़ा और यू.ए.ई ,यू के मे प्रचार किया 2014 में ईटली और आस्टरीया 2015 में गरीस, ईटली पुरतकाल आस्टरीया, 2016 में अमरीका ,कनेड़ा गरीस, ईटली और आस्टरीया यू.के 2017 में आस्टरीया, यू.के ,गरीस, ईटली ,अमेरीका ,कैनेडा और यू.ए.ई मे रविदासियां धर्म का प्रचार किया। संत सुरिन्दर दास बावा जी ने 2010 में श्री गुरू रविदास सभा बैरगामो ईटली,2011 में श्री गुरू रविदास सभा करोपी ऐथन गरीस मे, 2012 श्री गुरू रविदास सभा बलैन्सीया सपेन 2012 श्री गुरू रविदास सभा रोम 2014 गाँव मदारा जिलाँ जालन्धर (पंजाब), 11 सितंबर 2015 श्रीगुरु रविदास सुखसागर दरबार मनीदी गरीस, 30 दिसंबर 2015 गँव अलावलपुर 11 सितंबर 2016 साउथ हाल लंदन मे 21मई 2017 श्री गुरु रविदास भवन वारी इटली मे 28 मई 2017 श्री गुरु रविदास दरबार करोपी , ऐथनस, गरीस और 20 अगस्त 2017 ई0 टोरोंटों कैनेडा में रविदासिया कौम की ओर से गोल्ड मैडलों से सम्मानित किया गया। भारतीय दलित साहित्य अकैडमी दिल्ली की ओर से 2006 में संत सुरिन्दर दास बावा जी को श्री गुरु रविदास नैशनल अवार्ड के साथ सम्मानित किया गया। बढ़ती हुई संगत और प्रचार प्रसार हितो को ध्यान में रखते हुए यूरोप की संगतो की और से संगत की ओर से पास में कई पलांट इस स्थान को खरीद कर दे दिये। आज यह प्रचार अस्थान एक प्रकाश की किरण बनकर संगतो में उभर रहा है। इस पावन स्थान पर श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी ने स्थाई तौर पर निवास स्थान बनाया हुआ है। यहाँ आप स्वयम नाम जपते, बाणी पढ़ते सुनते और संगत को अैसा करने के लिए प्रेरित करते है। इस पावन स्थान पर रविदासीया धर्म के नियम मुताबिक ही अपने आपको ढालकर चलना पढ़ता है। इस प्रचार अस्थान पर ‘अमृतवाणीं भवन उसारा गया है, जिसमें अमृतवाणी सतृगुरू रविदास महाराज की सशोभित है जिस के सुबह शाम जाप और सत्संग होते है। हर रविवार और स्रंक्रांति पर विशेष दीवान सजाए जाते है। यहाँ पर लोगो की मनोकामनाए पूरी होती है। इस पावन अस्थान पर लोगो की अगाध श्रद्धा है। प्रतिदिन सुबह से शाम संगत र्दशनों के लिए आती है। इस दरबार मे लोगो को नाम बाणी के साथ–साथ समाजिक कुरीतियो जैसे नशे, दहेज, समागमो में अधिक खर्च, भ्रूणहत्या, निंदिया –

लिए विशेष प्रचार किया जाता है। यह प्रचार अस्थान सभी के लिए खुला है। प्रतेक धनी एवं गरीब के लिए समान है और सभी के स्तकार हित बनाया गया है। जहाँ पर कोई भी ऊँच-नीच नही है। इस प्रचार अस्थान पर मानवता की भलाई, जगत्गुरू रविदास महाराज जी के बेगमपुरा का संकल्प और डा° भीम राव अंबेडकर जी के पढ़ो, जुढ़ो, संघर्ष करो के विचार का प्रचार होता है। इस अस्थान पर 24 जुलाई 2016 दिन रविवार को संत सुरिंदर दास वावा जी, संत सत्यपाल जी चंढीगड़, संत बीबी कृष्ना देवी जी बोपाराय कला संत हरविंदर दास आदमपुर और संत समाज की उपस्थिति में जगतृगुरू रविदास महाराज जी की प्रतिमा 'अमृतवाणी भवन' में स्थापित की गई। इस अवसर पर श्री साधुराम हीर जी (रिटायर चीफ इंजीनियर, नारथ जोन दूरदर्शन) की रविदासिया कौम की बहुमुल्य सेवाओ के लिए गोल्ड मेडल से सम्मान्ति किया गया। इस अस्थान पर रहने और लंगर आदि की सुविधा भी है। इस प्रचार स्थान पर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज का संकल्प साकार होता नजर आ रहा है ,जिसके बारे में महाराज जी सोचा करते थे कि जगत्गुरू रविदास जी महाराज का घर–घर प्रचार हो। इस महान् कार्य के लिए श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी दिन रात एक करते हुए प्रयतनशील है। सत्गुरू इन पर अपनी कृपा दृष्टी बनाई रखे जो कि कौम के कार्यो के लिए डटे रहे।

कांशी राम कलेर.
जंडू सिंघा (जालन्धर)

Nishan Sahib of
Ravidassia Dharam

Some important facts relating to the life of Satguru Ravidass Maharaj

Date of Birth : Year 1377 A.D.(Magh Sudi 15, *Bikrami Samvat* 1433)

Birth place : Seer Goverdhanpur, Banaras (Varanasi), U. P. – India

Name of father : Shri Santokh Dass

Name of mother : Shrimati Kalsi Devi

Name of grandfather : Shri Kalu Ram

Name of grandmother : Shrimati Lakhpati

Name of wife : Shrimati Lona

Name of son : Shri Vijay Dass

Date of Brahmleen (Salvation) : Sangrand of month of Harh, Bikrami Samvat 1584, (1528 A. D.)

Place of Brahmleen (Salvation) : Banaras (Varanasi)

Principles of Ravidassia Religion

1. Our Guru : Satguru Ravidass Maharaj

2. Our Religion : Ravidassia

3. Our Religious Granth Amritbani Satguru Ravidass Maharaj

4. Our Religious Symbol :

5. Our Salutation : Jai Gurudev

6. Our ultimate place of Pilgrimage : Sri Guru Ravidass Janam Asthan Mandir, Seer Goverdhanpur, Varanasi (U.P.)-India

7. Our objects : To propagate the Bani and teachings of Satguru Ravidass. Besides the teachings and thoughts of Maharishi Bhagwan Valmik , Satguru Namdev, Satguru Kabir, Satguru Trilochan, Satguru Sain and Satguru Sadna would also be propagated.

To respect all religions, love the

विषय सूची

क्र.	विषय	प्रष्ठ
1.	पैंतीस अक्षरी	17
2.	बाणी ह.फ़तावार	23
3.	बाणी पन्दरां तिथी	26
4.	'बारह मास' उपदेश	37
5.	'दोहरा''	54
6.	''सांद बाणी''	54
7.	''अनमोल वचन''	57
8.	''शादी उपदेश''	57
9.	''सुहाग उसतत''	61
10.	''मंगलाचार''	62
11.	''अनमोल वचन''	68
12.	आरती–	70
13.	अरदास	78
14.	संत सुरिन्दर दास बावा जी की प्रकाशत पुस्तिक सूची	81

****

पैंतीस अक्षरी

उ–उसत्त करो इक ओंकारा। तीन लोक जिन किया पसारा।

उस एक प्रभु की उस्तति करो, जो तीनों लोकों, खण्ड–ब्रह्मण्डों भाव संसार के कण–कण में समाया हुआ है।

अ–अलख को लखे जो भाई। देहें ढंढोरा संत सिपाही।

अलख परमात्मा, जिसकी महिमा लिखी नहीं जा सकती, हे भाई संत सिपाही ढिंढोरा देकर कह रहे हैं, कि उसका सिमरन करो।

इ–ईश्वर काया घट में। आकाश रमइयो जैसे सब मट में।

ईश्वर सभी शरीरों में और कण–कण में बसता है, जैसे घड़े के पानी में आकाश नज़र आता है।

स–सीश महल में स्वामि दर्शे। जहां प्रेम अमी रस बरसे।

दशम द्वार रूपी शीश महल में, मालिक प्रभु के दर्शन होते हैं, जहाँ प्रेम से ब्रह्म अमृत बरस रहा है।

ह–हरि का सिमरण कीजै। कहे रविदास अमी रस पीजै।

सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि हरि का सिमरन कर, जीव ब्रह्म रस पीता है।

क –`काया कोटि में रम रहयो प्यारा। सीस महल में दे दीदारा।

करोड़ों ही भाव अनंत शरीरों में प्रभु प्यारा रमा हुआ है, जिसके दर्शन दशम द्वार रूपी शीश महल में होते हैं।

ख–ख्याल से करो विचारा। सर्वव्यापी सब से न्यारा।

जब जीव ध्यान कर प्रभु का विचार करता है, फिर उसे सर्वव्यापक प्रभु, सब से न्यारा लगता है।

ग–गोबिन्द ऐसे ज्ञानी। न कुछ भूले न कुछ जानी।

प्रभु रुपी ज्ञान की प्राप्ति कर जीव को न कुछ भूलने की और न कुछ जानने की आवश्यकता रहती है।

घ–घन नहीं अहरण सहे चोटां। सतगुरु शब्द घड़या है अनोठा।

जीव सतगुरु जी के शब्द रूपी अहरण के ऊपर, ऐसी चोटें सहकर अनोखी परमगति अवस्था में पहुँच जाता है।

ङ–ङयानत सोई सार। रहे रविदास बात विचार।

सतगुरु रविदास महाराज विचार कर उच्चारण करते हैं, कि अज्ञानता को त्याग कर प्रभु का सिमरन करो।

च–चाम का चोला भाई। नाम बिना कुछ काम न आई।

हे भाई! चमड़े का शरीर रूपी चोला, प्रभु नाम के बिना किसी भी काम नहीं आता।

छ–छिन में भया ममोला। अमी सरोवर दिया झकोला।

हे जीव! तुमने क्षणभर में नष्ट हो जाना है, इसलिए प्रभु नाम रूपी सरोवर में डुबकी लगा ले।

ज–जीव है, जनेऊ जाति का। दया की धोती तिलक सत्य का।

हे जीव! तुम श्रेष्ठ स्वभाव का जनेऊ, दया की धोती और सत्य का तिलक धारण करो।

झ–झिलमिल जोत जगाई। अलख पुरुष तहां पहुंचे आई।

हे जीव! तुम अपने अंदर के प्रभु की जगमगाती ज्योति को जगाओ, ताकि तुम्हें वहाँ पहुँच कर, अलख पुरुष के दर्शन हों।

ञ–ञयानत सोई ध्यानी। दास रविदास कहे ब्रह्म ज्ञानी।

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जो प्रभु को पहचान लेता है, वही सच्चा ध्यानी और ब्रह्मज्ञानी है।

ट–टैका टेर का एक राखो। एक बिना दूजा मत आखो।

हे जीव! एक प्रभु पर आशा रखो, उसके बिना और किसी से आशा मत रखो।

ठ–ठाकुर शीला तर गए भाई। पंडित बैठे मन मुरझाई।

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते है, कि प्रभु कृपा से, पत्थर के ठाकुर तैर गए। पर पंडितों के झूठे ठाकुर डूबने के कारण, उनके मन मुरझा

गए।

ड-डर नहीं हरि संग प्रीत। भगत जन बैठे मन को जीत।

जो जीव ईश्वर से प्रीति करता है, उसको कोई डर नहीं रहता। प्रभु के भक्तों ने विषय-विकारों से दूर होकर, अपना मन जीत लिया है।

ढ-ढा दीनी बुर्जीपापन। सिमरण कीना अजपा जपन।

जपा जाप सिमरन करने से, जीव के भीतर स्थित पापों का किला गिर जाता है।

ण-णम की लाई डोरी। कहे रविदास लगी लिव मोरी। सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि मेरी प्रभु से डोर बंध गई है, मेरी उस ईश्वर से लिव लग गई है।

त-त्रिगुण माया रचदी भाई। ऋषि मुनि लीने भरमाई।

सतो, रजो, तमो, माया की रचना प्रभु ने की है, जिसने ऋषियों-मुनियों को भरमा लिया है।

थ-थिर नहीं यह संसारा। राव रंक सब काल नगारा।

यह संसार सदैव रहने वाला नहीं है, राजा और गरीब सभी काल रूपी नगाड़ा (मौत) बजने पर संसार से चले जाते हैं।

द- दो इक दिन यहां मन्दिर सारा, फिर ठाठ छोड़ लद जाये बंजारा।

प्रभु ने निश्चित समय के लिए शरीर रूपी मंदिर की रचना की है। इस बंजारे ने शरीर रूपी मंदिर की ठाठ-बाठ को छोड़कर चले जाना है।

ध-धनी जिन ध्यान लगाइ। काल फांस के बीच न आइ।

हे भाई, असली धनी वह है, जिसने प्रभु भक्ति में ध्यान लगाया है और वह जीव काल-फांस के चक्र में नहीं आता।

न-नाम की नाव बनाई। कहे रविदास चढ़ो रे भाई।

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि हे भाई, प्रभु ने नाम की नाव बनाई है, जिसमें जीव सवार होकर पार हो जाता है।

प-पार ब्रह्म परमेश्वर स्वामी। सब घट-घट के अन्तरयामि।

परम ब्रह्म परमेश्वर सबका मालिक है और वह सब के मन को जानने

वाला है।

फ-फिकर कर छोड़ जगसंसा। जा मिल बैठे अविनाशी पासा।

हे जीव! संसार की चिंता त्याग कर प्रभु के सिमरन की फ़िक्र कर। अपने भीतर विराजमान अविनाशी प्रभु को प्राप्त कर ले।

ब-ब्रह्म सो ब्रह्म का वेता। गगन मंडल में राखो चेता।

ब्रह्मज्ञानी वह है, जिसने ब्रह्म को जान लिया है। आकाश के सभी मंडलों में उसको याद रखा है।

भ-भ्रम मिटे जो पंचम सीजे, जाये त्रिवैणी मजन कीजे।

जिस जीव ने पाँचों विकारों को जीत लिया है, उसका भ्रम मिट जाता है। फिर वह जीव त्रिकुटी, त्रिवैणी में पहुँच कर प्रभु के नाम में स्नान कर लेता है।

म-मन को गगन समाओ। कहे रविदास परम पद पाओ।

जो जीव अपने मन को ज्ञान रूपी आकाश में समा लेता है, वह परम-पद को प्राप्त कर लेता है।

य-याद करो, वाह के गुण गाओ। पार ब्रह्म के दर्शन पाओ।

हे भाई! प्रभु को याद कर, उसके गुण गाकर उस परमब्रह्म के दर्शन कर लो।

र-राम रमे सो राम प्यारा। फिर न देखया जम का द्वारा।

जो राम प्रेमी जीव उसके गुण गाकर उसमें समा जाता है, उस जीव को यमों का द्वार नहीं देखना पड़ता।

ल-लिव लगा ले भाई। जम का त्रास निकट न आई।

हे भाई! तुम उस प्रभु का ध्यान लगाओ। फिर यमों का भय तुम्हारे पास नहीं आयेगा।

व-विधीवध सिमरन कीजै। सोहं नाम अमी रस पीजै।

जो जीव गुरु जी की बताई हुई विधि के अनुसार सिमरन करता है, वही जीव प्रभु के नाम का श्रेष्ठ रस पीता है।

ड़- ड़ाड़ मिटि जब हुआ नबेड़ा, कहे रविदास किया अमर घर डेरा

प्रभु का नाम रूपी श्रेष्ठ रस पीकर, जीव सारे बंधनों से मुक्त हो जाता है और उसका प्रभु के अमर घर में निवास हो जाता है।

सोहं शब्द मन कीया बसेरा। मेट दिया चौरासी का फेरा।

जिस जीव के मन में प्रभु के सोहं शब्द का बसेरा हो जाता है, उसका चौरासी का फेर मिट जाता है।

ओंकार बावन का पैंतीस में जपयो है सार।

सर्व देव संतन को करें हैं नमस्कार।

उस सर्व-व्यापक प्रभु की पैंतीस अक्षरों में उस्तति की गई है। सभी देवता संतों के चरणों में नमस्कार करते हैं।

पैंतीस मात्रा प्रेम से सिमरें हैं निज दास।

जिन सिमरियो सो मुक्त हैं कहे सद रविदास।

सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, जो जीव प्रेम सहित पैंतीस अक्षरों का पाठ करता है और प्रभु का दास बन सिमरन करता है, वह मुक्त हो जाता है।

ओंकार पैंतीस मात्रा प्रेम से निसवासर कर जाप।

रविदास कहे जो सिमरते, मिट गये तीनों ताप।

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जो जीव प्रभु को याद कर प्रतिदिन प्रेम सहित पैंतीस मात्रा का जाप करता है, उसके तीनों तापों का स्वयं नाश हो जाता है।

ओंकार पैंती मात्रा प्रेम से सिमरण कीयो मन वैराग।

रविदास कहे जो सिमरते, तिन के पूरण भाग।

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि प्रभु की प्रशंसा में लिखे गए पैंतीस मात्रा के पाठ करने से, जिस जीव का मन वैरागमयी हो जाता है, वह श्रेष्ठ भाग्यवान है।

पैंतीस मात्रा प्रेम से सिमरते रवि प्रकाश।

रविदास कहे जो सिमरते, मिट गये जम के त्रास।

सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि प्रभु की पैंतीस

मात्रा का प्रेम से सिमरन करने से, जीव के मन में, ज्ञान का प्रकाश होने से, यमों के दुख से मुक्ति मिलती है।

रविदास सिमरत रमते राम में, सत शब्द प्रतीत।

अमर लोक जाये वसियो, काल कष्ट को जीत।

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, जो जीव प्रभु का नाम सिमरन कर और सत्य शब्द को खोज कर, उसका सिमरन कर, अमर लोक का निवासी बन जाता है, वह काल के सारे कष्टों को जीत लेता है।

ओंकार सप्त सलोकी मात्रा, सत कीयो जगदीश।

अमर लोक वासा कीया, काल नमावें शीश।

जो जीव प्रभु के सत्य श्लोक मात्रा का जाप कर परमात्मा को सत्य जानकर, अमरलोक का निवासी बन जाता है, उसके समक्ष फिर काल भी शीश झुकाता है।

****

॥ बाणी हफ़्तावार ॥

सोहं सतिनाम धियाओ ॥

ऐतवार अमृत दा भरिआ बोले अमृत बैन ॥
गुरु का शब्द जपो दिन राती ता आवे सुख चैन ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, रविवार का दिन प्रभु का सिमरन करने से अमृत से भरा प्रतीत होता है और अमृतमयी शब्द बोले जाते हैं। गुरु के शब्द का दिन रात्रि जाप करने से, सुखों की प्राप्ति और सच्चा सुख प्राप्त होता है।

ऐतवार वी सफल है हरि का सिमरन सार ॥
रविदास जो नाम उचारिए पाया मुख दुआर ॥1 ॥ टेक ॥

रविवार उन जीवों का सफल है जिन्होंने हरि के सिमरन को हृदय में संभाल कर रखा है। सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जो जीव प्रभु के नाम का उच्चारण करते हैं, उनको मुक्ति का द्वार प्राप्त हो जाता है।

सोमवार सभ ठोर में जले थले भगवान ॥
महिमा प्रभु गाईए तब होवे कलियाण ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि सोमवार प्रभु का सिमरन करने से पानी, धरती पाताल अर्थात् सभी स्थानों पर प्रभु का अनुभव होता है और प्रभु की महिमा करने से जीव का कल्याण होता है।

गोबिन्द गोबिन्द जाप से आवै सदा अनंद ॥
सोमवार सुख दा जपो जपो रविदास मुकंद ॥2 ॥ टेक ॥

गोबिंद का सिमरन करने से जीव को सदा आनंद की प्राप्ति होती है। सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि सोमवार वही जीव सुखी है, जो जीव मुकंद का जाप करते हैं।

मंगलवार आवै सदा होवे मंगलचार ॥
रल मिल सखीआं सिमरलो हरि हरि नाम अधार ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि मंगलवार को प्रभु का सिमरन करने से जीव के अंदर हमेशा मंगलचार होता है। हे सखियों !

प्रभु का हरि हरि नाम जीवन का आधार है, उसका सिमरन करो।

प्रीतम चरनी लागिया कभी न आवै हार॥

मंगलवार सुलखणा कहि रविदास विचार॥3॥ टेक॥

प्रभु चरणों में लगने से, जीव की कभी हार नहीं होती। सतगुरू रविदास जी महाराज विचारकर फ़रमाते हैं, कि प्रभु का सिमरन करने से मंगलवार सुहावना बन जाता है।

बुधवार बोध सदा होवै ज्ञान प्रकाश॥

गुरु प्रेम पूरे जो मिलै टूटे जम की फास॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि बुधवार प्रभु का सिमरन करने से सदा ही जीव के अंदर ज्ञान का प्रकाश होता है, पूर्ण गुरु से प्रेम करने से यमों का चक्र टूट जाता है।

अंत सहाई प्रभू भये करम कमाए सोई॥

बुधवार बुध सफल है रविदास जो भगत होय॥4॥ टेक॥

अंत समय में प्रभु जीवों पर कृपा करता है। सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं, कि प्रभु का सिमरन करने से जीव सफल हो जाता है।

वीरवार विदिया बड़ै पुन्न पुना अभियास॥

सतिगुर पूरे मिलन से होवे आतम प्रकाश॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि गुरुवार प्रभु के सिमरन का लगातार अभ्यास करने से, ज्ञान में बढ़ोतरी होती है, पूर्ण सतगुरु के मिलने से, जीव के अंदर, ज्ञान का प्रकाश हो जाता है।

गुरु ज्ञान का मूल है धरम मूल का हितकार॥

वीरवार बिचारीए नसै पाप हजार॥5॥ टेक॥

सतगुरु ज्ञान का आधार है। धर्म का मूल दया है। गुरुवार को प्रभु के नाम का विचार करने से, हज़ारों पापों का नाश हो जाता है।

शुकरवार सुहावना छिन छिन भजे करतार॥

विछै बाशना झूठीयां देवै नरकां डार॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि शुकरवार को

श्वास-श्वास ईश्वर का सिमरन करने से सुहावना बन जाता है। प्रभु के सिमरन के बिना झूठी विषय-वासनाएं, जीव को नरक में धकेल देती हैं।

गति करमां अनुसरा है जैसा जैसा होवै॥

शुकरवार सुहावणा रविदासी नाम जपेवै॥6॥टेक॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि प्रभु का सिमरन और श्रेष्ठ कर्म करने से प्राप्त होती है। सतगुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं, कि प्रभु का सिमरन करने से शुक्रवार सुहावना बन जाता है।

शनीवार भजन श्रृष्ट सत सत सभ वार॥

शुभ करमां से सफल है आवण जाण संसार॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि शनिवार प्रभु का भजन करने से, हर दिन शुभ लगता है। अच्छे कर्म करने से संसार में आना-जाना सफल हो जाता है।

बिन भजन बिरथा सभ जानते जो जो आवतवार॥

बारम वार हरि सिमरीए कहि रविदास बिचार॥7॥टेक॥

प्रभु के नाम बिना हर दिन व्यर्थ मानना चाहिए। सतगुरु रविदास महाराज जी विचारकर कहते हैं, कि लगातार प्रभु सिमरन करने से जीवन सफल हो जाता है।

****

बाणी पन्दरां तिथी

सोहं सतिनाम धियाओ ॥

अमावस जो है भाखिया जानो मीत ॥
श्रृष्ट मुनी सभ गावदे गीत ॥
अमावस है छूत सदा बसै है जग जीत ॥
बिरलै बिरलै पीवगे सोहं रस सुरजीत ॥1 ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि हे जीव ! अमावस्या तिथि को प्रभु का सिमरन कर, हे मेरे सज्जन, जो गुरु ने उच्चारण किया है, उस पर चल। इस सृष्टि के सारे मुनि उस प्रभु के गुणों के गीत गाते हैं। अमावस्या में, जीव के अंदर सदैव बस रहे प्रभु को प्राप्त कर संसार को जीत लेता है। बहुत कम जीव ही प्रभु के नाम रूपी रस को पीकर, अमर हो जाते हैं।

भगता सेती गोष्टी जाए सभी बिहाय ॥
आउना उसका सफल है जो जाते लाभ उठाय ॥
अमावस है जो आंउदिआ आवन जावन रीत ॥
कहि रविदास विचारके राखो हरि से प्रीति ॥2 ॥1 ॥ टेक ॥

जो जीव प्रभु के सिमरन करने वालों से गोष्ठि करते है, उनका आना सफल हो जाता है और लाभ प्राप्त करते हैं। अमावस्या के आने जाने की रीत चलती रहती है। सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि हरि से हमेशा प्रीति करनी चाहिए।

एकम एक परमात्मा संसारै है प्रकाश ॥
सवास सवास तू सिमरलै तोड़े जम की फास ॥1 ॥
दीन बंधू दिआल जो सोय है सिमरन सार ॥
जगत सदा जो सुख देवे अंतर होय आधार ॥2 ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, एकम् तिथि में प्रभु का सिमरन करने से सारे संसार में उसका प्रकाश अनुभव होता है। श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करने से यमों का चक्र टूट जाता है। गरीबों का सहायक और

दयालु प्रभु का सिमरन करना ही श्रेष्ठ है। जगत में प्रभु सदा सुख देने वाला और जीव का उद्धार करने वाला है।

हसती चीटी आदि लै जीवन हुकम अनुसार ॥
भजन करो जन पालका होना जेकर पार ॥3 ॥
एकम एक परमात्मा रखणी उसकी आस ॥
सति सति प्रभू सिमरते सच कहै रविदास ॥4 ॥2 ॥टेक ॥

हाथी से लेकर चींटी तक सारे जीव उसके आदेश अधीन है। यदि जीव को संसार सागर से पार होना है, तो प्रभु का सिमरन कर एकम् तिथि में प्रभु पर आशा रखनी चाहिए। सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि सदैव रहने वाले प्रभु का सिमरन करना चाहिए।

दूजी दुरमति दूर कर रखणा गुरु से नेऊ ॥
सफल करम तब होणगे गती पावै इह देहू ॥1 ॥
दूजी दुरमति दूर कर दया धरम किरपाल ॥
सति से कर गोष्ठी हिरदिया बसै गोपाल ॥2 ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं,दूसरी तिथि में जीव को दुर्मतः त्याग कर गुरु से प्रेम करना चाहिए। तिथि से जीव के सारे कार्य सफल होंगे और मुक्ति प्राप्त होगी। दूसरों के प्रति दोष मति को त्याग कर, जीव को दयावान, धर्मी और कृपालु बनना चाहिए। प्रभु के संतों से सत्य का विचार करने से, प्रभु हृदय में बसा हुआ अनुभव होता है।

सुभ करमा फल सुभ है करमां संदणा खेत ॥
पाप करम दे कीतिक सदा हार नहीं जीत ॥3 ॥
दूजी दुरमति त्याग कर लीला अजब पहिचान ॥
कहि रविदास बिचारके भगत भजन कलियाण ॥4 ॥3 ॥ टेक ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, अच्छे कर्मों का फल श्रेष्ठ है। संसार कर्मों रूपी खेत है। पाप कर्म करने से हमेशा हार होती है, जीत नहीं। हे जीव, दुर्मत को त्याग कर प्रभु की अद्भूत लीला की पहचान कर।

सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं, कि प्रभु के भजन करने से कल्याण होता है।

संसारी तृष्णा त्याग के तन मन धन गुरुदेव॥
मथिया सभ को जानके रख नाम सनेह॥1॥
करमी भगती करन से होवै जगत अधार॥
वहि सोभा अति घनी अगे मिलै भंडार॥2॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, हे जीव! इस संसार की तृष्णा को त्यागकर अपना तन, मन, धन अर्थात् अपना सर्वस्व प्रभु को समर्पित कर दे। संसार को मिथ्या जानकर प्रभु नाम के साथ प्रेम करे। प्रभु की भक्ति करने से ही संसार का उद्धार होता है। इसी से जीव को शोभा मिलती है तथा प्रभु का नाम रूपी अमूल्य धन प्राप्त होता है।

तीरथ फल ना बरत फल नहीं जग कोई पाय॥
मन महि हऊमै अहंकार जोय बिरथा सभही जाय॥3॥
तृतीय त्यागीये मान को खोटे करम हंकार॥
हरि हरि नाम उचारीए कहि रविदास पुकार॥4॥4॥ टेक॥

मन में अहंकार होने से, जीव से, जीव को तीर्थ फल एवं व्रत फल की प्राप्ति नहीं होती, बल्कि सब कुछ व्यर्थ ही चला जाता है। तीसरी तिथि में प्रतिष्ठा बुरे कर्म एवं अहंकार का परित्याग करना चाहिए। सतगुरु रविदास महाराज जी पुकार कर समझाते हुए कहते हैं कि जीव को सदैव हरि-हरि नाम का जाप करते रहना चाहिए।

चौथ चारो तरफ महि दसों दिसा चोगिरद॥
जलै थलै प्रभू आप है राखो नाम की विरद॥1॥
चमन जो तुझै दिख रहा रहिना नहीं हमेश॥
छण भंगूर शरीर है बदन रहित ना केस॥2॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, चौथी तिथि में चारों ओर दसों दिशाओं में हर तरफ प्रभु विराजमान है जो जीवों की पानी धरती भाव हर तरफ रक्षा करता है। संसार जो दिख रहा है, हमेशा रहने वाला नहीं है। शरीर

क्षण भर में नष्ट होने वाला है। यह हमेशा नहीं रहेगा।

सहायता कोई ना कर सके जिन सो लाया हेत ॥
अंत समें छड जाइगे मुख सेवन प्रेत ॥3 ॥
चौथ चोरी ना करो त्यागो विषै बिकार ॥
गेबिन्द सिमरनि सार है कहि रविदास विचार ॥4 ॥5 ॥ टेक ॥

प्रभु के बिना जिन्होंने केवल जीवों को प्रेम किया, कोई भी उन जीवों की सहायता नहीं करता। अंत समय में, उसके सभी प्रियजन, उसका साथ छोड़ जाते हैं और उसे 'प्रेत' कह कर पुकारते है।चौथी तिथि द्वारा गुरु जी उपदेश देते हैं कि जीव को चोरी नहीं करनी चाहिए अत: विषय विकारों को त्यागना चाहिए। सतगुरु रविदास महाराज जी विचार कर उच्चारण करते हैं, कि प्रभु का सिमरन ही श्रेष्ठ है।

पंचमी प्रीतम जान लउ सभना है भगवंत ॥
ब्राह्मण आदिक सिमरते कोई ना पाया अंत ॥1 ॥
पंच ततव की रचना है जो दिखै आकार ॥
तिसमे होवै लीन सभ लीला प्रभ अपार ॥2 ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं पाँचवी तिथि द्वारा प्रभु प्रियतम को हर ओर अनुभव करना चाहिए। ब्राह्मण आदि कोई भी सिमरन कर उसका अंत नहीं पा सके। संसार की रचना पाँच तत्त्वों से हुई है। उस प्रभु में सभी लीन हो जायेंगे। यह प्रभु का बेअंत कौतक है।

विषै वाशना झूठ है राह भला बीच नीत ॥
बिना भजन संगी नहीं सरब सुखा का मीत ॥3 ॥
पंचमे पती परमातमा सरब सृष्टि जान ॥
गुर की सरनी धियावते होवै रविदास ज्ञान ॥4 ॥6 ॥ टेक ॥

विषय-वाशनाओं का झूठ है। इनसे किनारा करना ही अच्छा है। प्रभु भजन के बिना और कोई साथी नहीं है। प्रभु सभी सुख देने वाला सच्चा मित्र है। पाँचवी तिथि में, पति परमात्मा को सारी सृष्टि में अनुभव करना चाहिए। सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि जीव को गुरु की शरण में

जाकर प्रभु का ध्यान करने से ज्ञान प्राप्त होता है।

शिष्टमी बित विखीयानीए षट रस भोजन आदि ॥
जिसने सभ पैदा कीए कर तूं उसकी याद ॥1 ॥
जो देखत सभ बिनसता बापर शाही आदि ॥
द्बसमरन कर तूं प्रभू का जो है आदि जुगादि ॥2 ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, छठी तिथि द्वारा सतगुरू रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं, कि छः प्रकार के रस और भोजन प्रभु ने पैदा किए हैं, हे जीव तू उसको याद कर। तुम यह सब देख रहे हो कि बड़े-बड़े राजा-महाराजा नष्ट होने वाले है। आदि-जुगादि युगों से प्रभु है।

उलटे निजमां कीतिया आवत तुझको हार ॥
सुभ करम के करन से पावै सति दरबार ॥3 ॥
शिष्टमी शुद करम करावै जोवै ॥
गुरू मिल जीवन मुकत है सखा रविदासी होवै ॥7 ॥1 ॥ टेक ॥

हे जीव! तू उसका सिमरन कर। प्रभु को भूल कर और बुरे कर्मों में पड़कर, हे जीव! तुम्हें पराजय मिलेगी। अच्छे कर्मों से हे जीव तुम्हें सच्चे दरबार की प्राप्ति होगी। छठी तिथि तभी श्रेष्ठ है यदि जीव अच्छे कर्म करे, सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि सच्चा सहायक गुरू है जिससे मिल कर जीव को जीवन में मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

सतमी सारे रम रहा आप हरी सिरजनहार ॥
तूं ना भूले पराणीयां सिमरन बारमबार ॥1 ॥
हरि पूरन परमातमा निरधन अधार ॥
सरब वियापी प्रभू है तूं ना कभी बिसार ॥2 ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, सातवीं तिथि में सर्वव्याप्त हरि सृजनहार को याद करो। हे प्राणियों तुम उस प्रभु को मत भूलो, उसका बार-बार सिमरन करो। हरि पूर्ण परमात्मा गरीबों का आधार है। सर्व-व्यापक प्रभु को कभी भी न भूलाओ।

दुखीयां के दुख दूर कर कष्ट निवारो आप ॥
सदा सहाई प्रभू है करै जो उसका जाप ॥3 ॥
निंद का हंकारी पाठ का भगत है तास ॥
हरि भजन संग मुकती पावै जन रविदास ॥4 ॥8 ॥ टेक ॥

प्रभु स्वयं दुखियों के दुख दूर करता है, जो प्रभु का जाप करता है, प्रभु उसका सहायक है। प्रभु भक्त हमेशा निंदा और अहंकार त्यागने का पाठ पढ़ाते हैं। सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि हरि के दास हरि का भजन करने से मुक्ति प्राप्त करते हैं।

अठमी आठो आम जो सिमरन कर हरिनाम ॥
सुध तेरा प्रलोक जो होवै अंत कलियाण ॥1 ॥
होवै ज्ञान की रोशनी गुरु ज्ञान का मूल ॥
गुरु सेवा बहि संत की करम कमाय असलू ॥2 ॥

आठवीं तिथि द्वारा सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि हे जीव तू हरि का सिमरन कर, जिससे तम्हारा परलोक सुखी होगा और तुझे मुक्ति प्राप्त होगी। जब जीव के अंदर गुरू ज्ञान का प्रकाश होता है, तो जीव अपने मूल प्रभु से जुड़ जाता है। गुरू की सेवा में बैठकर जीव वास्तविक प्रभु का नाम जपने का कर्म बनाता है।

भूलन अंदर सभ को अभुल्ल प्रभू है आप ॥
भुल्ला रहे जो पाप से मिटत सकल संताप ॥3 ॥
अठमी अटक ना होवसी जिस का रिदा सुफाय ॥
रविदास अटक है उसको पाप पोटरी उठाय ॥4 ॥9 ॥ टेक ॥

एक प्रभु ही अभूल है बाकी सब जीव भूल करते हैं। जो जीव पापों को भुला देता है, उसके सारे संताप समाप्त हो जाते हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि उस जीव को प्रभु मिलने में कोई रूकावट नहीं पड़ती, जिसका मन निर्मल है। परन्तु उस जीव को रूकावट है, जिसने सिर पर पापों की गठड़ी उठाई है।

नौमी नौध भगत जो है भगता मनजूर ॥
पुरष भला जो करेगे सभना पूरन पूर ॥1 ॥
पद सेवन कीरतन जस चोथै अरपण जान ॥
दास सखा ने अरपना आठो बंदना मान ॥2 ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि नौ प्रकार की भक्ति, प्रभु के भक्तों को मान्य है। भला पुरुष वही है, जो प्रभु को हर ओर पूर्ण जानता है। चरण सेवा, भक्त कीर्तन, भक्ति यश करना, चौथी अर्पण भक्ति को जान। दास भक्ति, सखा भक्ति, अर्पण भक्ति, आठवीं वन्दना माना ।

नौमी डंडाउत कही जो कहे कराए जाय ॥
रविदास भजन अमोल है बिरला पाए कोय ॥3 ॥10 ॥ टेक ॥

नौवीं भक्ति डंडाऊत कही ह जो जीव को करनी चाहिए। सतगुरू रविदास जी महाराज कहते हैं, कि प्रभु का भजन अमूल्य है जो किसी विशेष जीव को प्राप्त होता है।

दसमी दरद निवार लै सचे सतिगुर संग ॥
समां विअरथ जाइगा हंकारी दुष्ट भुजंग ॥1 ॥
मैं मेरी नूं मार लै मन महि शांत होवै ॥
क्रोध बुरा है काल से इसको लेउ समावै ॥2 ॥

दसवीं तिथि द्वारा सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जीव तू सच्चे सतगुरु की संगति में जाकर दुखों को समाप्त कर ले। उन जीवों का समय व्यर्थ जाएगा। जो अहंकारी, दुष्ट और जुल्म करते हैं। मैं मेरी को मारकर, मन को शांति मिलती है। क्रोध काल से भी बुरा है। तू इसको समाप्त कर।

श्रृष्ट मुनी सभ समझते करदे नाम अधार ॥
सरब ठोर में बस रहा सच्चा सिरजणहार ॥3 ॥
दसमी दिशो दिश बस रहा सारे है करतार ॥

हरि हरि तुल ना प्रानीआं कहि रविदास बिचार ॥4 ॥11 ॥ टेक ॥

उत्त्म मुनि नाम को आधार मानते हैं। वह सच्चा सृजणहार प्रभु सब जगह व्यापक है। सतगुरु रविदास जी महाराज दसवीं तिथि द्वारा विचार कर फरमाते हैं कि दस दिशाओं भाव हर ओर करतार प्रभु बस रहा है। उस हरि का सिमरन करना चाहिए, जिस हरि के नाम के तुलनीय और कोई वस्तु नहीं।

एकादसी एक दा दास रहू फूरने तजो अनेक ॥
भगत होत तर जावगे सदा मानीए टेक ॥1 ॥
अंबा गुवाही निंदा बास ऐह जान ॥
ऐह सब जोहर सुमन है छाडो इनका ध्यान ॥2 ॥

ग्याहरवीं तिथि द्वारा सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि एक प्रभु का दास बनकर अन्य सभी विचारों को त्याग देना चाहिए। उस प्रभु की भक्ति करने से जीव मोक्ष प्राप्त करता है। इसलिए हमेशा उस पर विश्वास रखना चाहिए। झूठी ग्वाही, निंदा, वासनाऐं यह झूठी है, ज़हर समान समझकर इनका ध्यान छोड़ना चाहिए।

जूआ मास मधर बेषिया हिंसा चोरी कार ॥
जिह खोटे करम है डोबन नरक मझार ॥3 ॥
मनुख जून सुलखणी गत करमां अनुसार ॥
बिना भजन बिरथा जनम जाय कहि रविदास बिचार ॥4 ॥12 ॥ टेक ॥

जुआ खेलना, मांस खाना, शराब पीना, वेसवा (वेश्य) संग, हिंसा और चोरी यह सब खोटे कर्म जीव को डुबोने वाले हैं ।सतगुरु रविदास महाराज जी विचारकर फरमाते हैं,कि मानव योनि/जीवन बहुत ही श्रेष्ठ है, जो अच्छे कर्मों के अनुसार प्राप्त होती है पर प्रभु के नाम के बिना अमूल्य जन्म व्यर्थ जा रहा है।

दुरादसी दे दरबार डिठा अजब अंध ॥
बड़े क्रोध से पाप है बास खिमा मुकंद ॥1 ॥

सति संगति महि धरम है बड़े नाम का रंग ॥
बैकुंठ भी उसे आखदे जहा होते संत संग ॥2 ॥

बाहरवीं तिथि के द्वारा सतगुरू जी फ़रमाते हैं, कि प्रभु का सिमरन कर, जीव ने, प्रभु के सच्चे दरबार में जाकर अजब आनंद देखा। क्रोध करने से पाप बढ़ते हैं और क्षमा करने से प्रभु की प्राप्ति होती है। सत्संगति में सच्चा धर्म है, जहाँ नाम का पक्का रंग चढ़ता है। जिस जगह संतों का संग प्राप्त हो, उसको बैकुण्ठ कहा जाता है।

धन के भागी चार है धरम चोर नरप आग ॥
धरम हेत जो लाएगा तिन कहे बडभाग ॥3 ॥
धरम हेत ना लामदे लैदे तीनो नाय ॥
चोर नरप ओर आग जो कहि रविदास बताय ॥4 ॥13 ॥ टेक ॥

सतगुरू रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं, कि धन के चार हिस्सेदार हैं धर्म, चोर, राजा और आग, जो जीव धन धर्म में लगाएगा उसके बड़े भाग्य है। जो जीव धन धर्म के लिए नहीं लगाते, वह धन चोर, राजा और आग के हिस्से आता है।

तरैदसी तारन हार है सदा सदा तूं ध्याय ॥
लख चुरासी जून से उतम दीया बनाय ॥1 ॥
बंदे बुरज बना दीयां ऐसा अजब बनाय ॥
ऐसा बने ना ओर से मन तन सीस लगाय ॥2 ॥

तेहरवीं तिथि द्वारा सतगुरु रविदास महाराज जी जीवों को हमेशा तारनहार प्रभु को हमेशा के लिए जपने का उपेदश देते हैं। इस मानस जीव को चौरासी लाख योनियों में सब से श्रेष्ठ है। प्रभु ने ऐसा मानव का अजीब शरीर बनाया है। जिस शरीर में प्रभु ने मन और शीश (दिमाग) लगाया है। ऐसा शरीर प्रभु के बिना और कोई नहीं बना सकता।

उस को ना तूं भूलणा पिआ पट के भाय ॥
तूझै अहार पहुँचावता उदर मात के जाय ॥3 ॥

तेरस तेरा कलपना झूठा दिखता भास ॥
झूठा सच्चे पेट का सच कहे रविदास ॥4 ॥14 ॥ टेक ॥

उस प्रभु को तुम भुला कर अपना अमूल्य जीवन न गंवाओ, वह प्रभु तुम्हें माता के पेट में भी आहार पहुँचाता है। सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि हे जीव प्रभु को भुला कर, तेरी कल्पनाएँ झूठी है। शरीर के झूठ और सच की बात, गुरू जी इसी तरह बताते हैं।

चांद चौदा भए जब दिखता सरब अकार ॥
सरब बियापी प्रभू है सूरज चंद अते तार ॥1 ॥
हरि से प्रीत करो मन मेरे जैसे चंद चकेर ॥
बालक प्रीति खीर से बादल घटा से मोर ॥2 ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, जैसे चौदहवीं के चाँद का पूरा आकार हर ओर दिखाई देता है। इस तरह सर्व–व्यापक प्रभु, सूर्य, चाँद और तारों से सर्वव्याप्त हैं। हे जीव, हरि से इस तरह की प्रीति कर जैसे चाँद की चकोर के साथ, बालक की खीर के साथ, मोर की बादल घटा से है।

छिछ बिन सूनी रैन जो हिरदै ज्ञान बिन मान ॥
गुरु ज्ञान अमुल है उतम भगत हरि जान ॥3 ॥
चौदा चौदा रतन सम इच्छा पूरन होवै ॥
रविदास संसै सभ मिटै प्रभू प्रेम बस होवै ॥4 ॥15 ॥ टेक ॥

जैसे चंद्रमा बिना रात अधूरी है, उसी प्रकार हृदय ज्ञान के बिना अधूरा है। गुरू का ज्ञान अमूल्य है, यह हरि का उत्तम भक्त ही जानता है। सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि प्रभु से प्रेम करने से प्रभु वश में हो जाता है, सभी भ्रम मिट जाते है और जीव की चौदह रत्न समान इच्छा पूर्ण हो जाती है।

पुन्या पूरन चंदरमा सारे हा परकास ॥
लोचन ज्ञानी तरैगे हिरदै नाम परकाश ॥1 ॥

गुरु सुख अमृत पीवगे मनमुख अंध गवार ॥

प्रेम लाई लड़ फड़ैगे मिलत पदारथ चार ॥2 ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, पूर्णमाशी (पूर्णिमा) द्वारा सतगुरू जी उपदेश करते हैं, कि जैसे पूर्णिमा की रात पूर्ण चंद्रमा का प्रकाश होता है। इसी तरह आँखों में ज्ञान का काजल डालने से जीव के हृद्‌य में, प्रभु के नाम का प्रकाश हो जाता है। और जीव मोक्ष प्राप्त कर लेता है। जीव गुरू के पास जाकर, प्रभु के नाम का अमृत पीकर सुखी हो जाता है। पर मनमुख मनुष्य अनपढ़ अज्ञानता में ही भटकता रहता है। जो जीव प्रेम से गुरू का दामन पकड़ लेगा, उस को चार पदार्थ काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष प्राप्त होते हैं।

रविदास जिह ग्रंथ है पड़ै सुणै मन लाय ॥

सभ ही पदारथ मिलेगे इससे सभ बर पाय ॥3 ॥

पंदरां तिथी संपूरन है पूरन पाठ कराय ॥

सरब इछिआ संपूरन है सभना रविदास सहाय ॥4 ॥16 ॥ टेक ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जह ग्रंथ जो जीव मन लगाकर पढ़ेगा, सुनेगा, उसको सारे पदारथ और वर प्राप्त होंगे, पंद्रह तिथिय कथा संपूर्ण है जो जीव इसका संपूर्ण पाठ करता है। उसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण होती है।

****

‘बारह मास’ उपदेश

“चेत”

चढ़या चेत सुलखना, कर संतन संग प्रीत॥

गुर चरनन चित्त लाए कर, राम नाम जप्प नीत॥

हे जीव! चेत का महीना भाव मानव जन्म उस समय भाग्यपूर्ण होता है, जब जीव संतों से प्रीत कर, प्रभु को याद करता है, इसलिए हे जीव, तू गुरू चरणों में प्रीत लगाकर प्रभु का नाम जप।

गुर गोबिंद जहि गाईए, कर सरवण नित्त नीत॥

गुर के चरनन प्रेम कर, हिरदे धरो गुर मीत॥

जिस समय गुरू और प्रभु महिमा गाई जाती है, उसको नित्य प्रति श्रवण करना चाहिए। हे मित्र! गुरू के चरणों से प्रीत करके गुरू को अपने हृदय में धारण कर।

बचन गुर के सुनत ही, मिटत भरम सभ भीत॥

मन मुख संग ना कीजीए, गुरमुख संगत याहर॥

गुरू जी के वचन श्रवण करने से, जीव के अंदर, से सारे भ्रम दूर हो जाते हैं। जीव को मनमुखों की संगत त्याग कर, गुरमुख की संगत करनी चाहिए।

मनमुख संगत बिघन है, गुरमुख संगत सार॥

मनमुख संगत डूबणो, गुरमुख संगत पार॥

मनमुख की संगत, प्रभु के रास्ते में विघ्न है और गुरमुख की संगत, प्रभु मिलाप के लिए सहायक है। मनमुख की संगत, जीव को डुबाती है और गुरमुख की संगत भव-सागर पार करती है।

गुरमुख रिदै प्रगास है, मनमुख अंध गुवार॥

गुर के अमृत वचन सुण, शरधा हिरदे धार॥

गुरमुख की संगत करने से, हृदय में, ज्ञान का प्रकाश होता है और मनमुख की संगत करने से, जीव, अज्ञानता रूपी अंधेरे में, फंस जाते हैं। हे जीव, तुम गुरू के अमृत रूपी वचन श्रवण करके हृदय में धारण करो।

रविदास भगती एही है, हिरदे खूब विचार ॥

चेत सुहाणां तिनां नूं, जिनां सोहं नाम प्यार ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि यही प्रभु की भक्ति है। तू अपने हृदय में अच्छी तरह विचार कर। चेत का महीना अथवा यह अमूल्य जन्म उनका ही सुहावना है, जिनका गुरू जी के शब्द से प्यार है।

****

"वैसाख"

वैसाख सुहावा सर्व सुख, गुर के वचन विचार ॥

अंतर ध्यान लगाए कर, समझो सार आसार ॥

वैसाख का महीना भाव अमूल्य जन्म उन जीवों के लिए सर्व सुखों वाला है, जिनका गुरू जी के वचन से प्यार है। अपने भीतर उस प्रभु का ध्यान लगाकर, जिस प्रभु का कोई पारावार नहीं है, उसकी शोभा को समझो।

गुरदेव को ग्रहन कर, तज सब झूठ बिकार ॥

हिरदे हरि, हरि हरी को, सिमरो वारं वार ॥

गुरुदेव जी की शिक्षा को ग्रहण करके, सभी झूठे विकारों को त्याग दो, अपने हृदय में हरि हरि प्रभु के नाम का बार बार सिमरन करो।

दुष्टा संग त्याग कर, संतां संग प्यार ॥

दृड़ कर राम ध्याऐ तूं, भव निधि उतरे पार ॥

हे जीव, तू दुष्टों का संग त्याग कर, संतों से प्यार कर। हे जीव, तू पक्का निश्चय करके, प्रभु का नाम स्मरण कर भव सागर को पार कर ले।

हरि, हरि नाम जपंदिया, कदी ना आवे हार ॥

भगत बिना गुरदेव की, होवत नहीं कल्याण ॥

हरि हरि नाम जपने से ही जीव, तेरी कभी भी हार नहीं होगी। गुरू जी की भक्ति के बिना जीव का कल्याण नहीं होता।

गुरु बिना जन्म विअर्थ ऐह, जावत साची मान ॥

गुर हरि भगत कहंदिया, निहचल मिल है ज्ञान ॥

गुरू की भक्ति के बिना, यह जीवन व्यर्थ है, इस बात को तू सच्ची

मान। हरि की भक्ति करने से, जीव को अटल ज्ञान प्राप्त होता है।

कहे रविदास लग चरन गुर, मन का हर अभिमान॥

वैसाख सुहावा तिनां है, हरि, हरि जपे सुजान॥

सत्गुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं, कि गुरु के चरणों में जुड़ने से, मन में से अहंकार समाप्त हो जाता है। वैसाख का महीना उनके लिए सुहावना है, जो हरि का नाम जप कर महान हो गए हैं।

****

"जेठ"

जेठ तपत बहु घाम कर, शांत ना होवत मीत॥

क्रोध अगनि कर तपत, मन लोभी लोभ परीत॥

जेठ का महीना भाव मानव जन्म प्रभु के नाम बिना बहुत तपिश वाला है, हे सज्जन शांति प्राप्त नहीं होती। क्रोध की अग्नि में जीव तपता है, लोभी मन लोभ से प्रीति करता है।

सोहं नाम मुख जपत, जन कीरत करैह नीत॥

संतां संग निवास कर, शांत भयो तिन चीत॥

प्रभु का नाम मुख से उच्चारने से, प्रभु के दास, उसकी कीर्ति का गुणगान करते हैं। संतों की संगत में रहने से, जीव का मन शांत रहता है।

उतपत करे आप सभि, करे पालणा नीत॥

प्रभू बिन दूजा नांहि को, कर निहचे परतीत॥

प्रभु स्वयं ही संसार की उत्पति करता है और प्रति दिन उसकी पालना भी करता है, प्रभु के बिना अन्य दूसरा कोई नहीं है। इस बात पर निश्चय करके, तू उसका यशगान कर।

तिस प्रभू को तूं जप सदा, होकर मनो नाचीत॥

प्रभू सिमरन गुर दया ते, नष्ट होत जम भीत॥

हे जीव! तू मन से निश्चिंत होकर उस प्रभु का हमेशा जाप कर। प्रभु के सिमरन और गुरू की दया से यमों का भय नष्ट हो जाता है।

सतगुर के प्रताप ते, गावहु प्रभू गुण वाद ॥

सो किरण नेतर रसना नाम का, करण दीए सुण नाद ॥

सत्गुरू जी की कृपा से, जीव, प्रभु के गुणों को गाता है। प्रभु की कृपा से नेत्र गुरु के दर्शन करते हैं। जीह्वा गुरू का नाम जपती है और कान अनहद नाद श्रवण करते है।

सुंदर साजिया जाहि प्रभ, राख सदा तिस याद ॥

जो जन भगत बिहीन है, जनम जाए तिस बाद ॥

प्रभु ने इस शरीर को अत्यंत सुन्दर ढंग से सृजित किया है, जीव तू उसको याद रख, जो जीव प्रभु की भक्ति के बिना है, उनका जन्म व्यर्थ जा रहा है।

गुर चरनी लग भगत कर, मिटह पाप अगाद ॥

कीरतन भगती तीसरी, रखो इन को याद ॥

गुरू जी के चरणों से लगने और भक्ति करने से, जीव के सारे पाप मिट जाते हैं। हे जीव ! जो तीसरी कीर्तन भक्ति है, इसको सदैव याद रखो।

जन रविदास गुरू सिमरिया, जो जन सदा आनाद ॥

जेठ तापंदा ना लगे, जिन चाखिया नाम सुआद ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं कि जिन जीवों ने, गुरू के शब्द का स्मरण किया है, वे सदा आनंद में रहते हैं। जेठ का महीना उनको तपाता नहीं है, जिन्होंने प्रभु के नाम का भाव आनंद अनुभव कीया है।

****

"हाड़"

हाड़ अवध है घाम की, शांत अवध सुख जान ॥

लोभ अवध है पाप की, कर भगत मिले हरि धाम ॥

आषाड़ का महीना गर्मी वाला है, पर सच्चा सुख प्रभु के नाम में है। लोभ करना पाप है, प्रभु की भक्ति करने से, प्रभु का धाम प्राप्त होता है।

गुर के चरन सु कंवल की, करहि सेव सुजान ॥

सगल सृष्टि जैसे मलत , चरण कंवल भगवान ॥

श्रेष्ठ जीव गुरू के चरण–कमल की सेवा करते हैं। सारी सृष्टि के जीव प्रभु के चरण–कमलों को प्राप्त करना चाहते हैं।

आठ पहिर गुर चरन मल, दृढ़ कर निहचे ध्यान ॥

अन्तश करण कर शुद्ध, तब होत पाप की हान ॥

हर समय गुरू के चरण–कमल का एक मन एक चित होकर ध्यान धारण करने से, अंतहि–कर्ण शुद्ध हो जाता है और पापों का नाश हो जाता है।

पाप नष्ट गुर भगत ते, दर्शन करहो नीत ॥

कारण भगत है मुकत का, कर निहचे प्रतीत ॥

गुरू की भक्ति करने से, पाप नष्ट हो जाते हैं, इसलिए हर समय गुरू के दर्शन करने चाहिए, निश्चय कर प्रभु की भक्ति करनी चाहिए, जिससे मुक्ति मिलती है।

चरन भगत कर लछमी, शक्ति भई सु मीत ॥

जगत चरन की शक्त तिस, भई सु जानो मीत ॥

प्रभु के चरण–कमलों की भक्ति करके माया बलवान हो जाती है और उस में प्रभु की भक्ति करने से सारे संसार की शक्ति आ जाती है।

भगति सु गुर के चरन की, कर निहचे धर चीत ॥

गुर बिन और ना ध्यान धर, ऐह रविदास की रीत ॥

हाड़ शान्त सुख तिन जनां, जिन गुर भगत प्रीत ॥

इस लिए हे जीव! तू प्रभु के चरण कमलों की एक–मन, एक चित होकर भक्ति कर। गुरु के बिना अन्य कोई ध्यान नहीं करना चाहिए। सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि यह भक्ति की रीति है। आषाढ़ का महीना भाव मानव जन्म उनका सुख भरा है, जिनका गुरू भक्ति से प्रेम है।

****

"सावन"

सावण शान्त भई जगत में, बारश होए बशेस ॥

घर घर मंगलाचार है, नासे सभी कलेश ॥

सावन के महीने सारे संसार में शांति हो जाती है क्योंकि इसमें विशेषतः बारिश होती है। घर घर खुशी के गीत गाए जाते हैं और सारे दुख दूर हो जाते है।

अन्न धन बहुता उपजिआ, गऊआं घास हमेश ॥

सुहागणि सदा आनन्द है, दुहागणि मैला भेस ॥

अन्न धन की बहुत उपज होती है और गायों को घास प्राप्त होती है। पतिव्रता औरत सदैव आनंद में रहती है और दुहागिन अंतहिकर्ण रूपी कपड़ा मैला करती है।

कर पूजन गुर चरन की, शरधा साथ हमेश ॥

पान, सुपारी, पुष्पकर पूजन करो हमेश ॥

हे जीव! तुम गुरु के चरणों की पूजा हमेशा श्रद्धा से करो, गुरू चरणों की सेवा पान सुपारी फूलों से हमेशा करो।

अर्चना भगती पंचमी, गुर पूजा में ध्यान ॥

बिना इष्ट गुरदेव ते, पूजो देव ना आन ॥

प्रभु की अर्चना भक्ति पांचवी है जिसमें गुरु की पूजा में ध्यान लगाया जाता है। इष्ट गुरुदेव के बिना और किसी की पूजा नहीं करनी चाहिए।

गुरू हरि में ना भेद कुझ, कहयो आप सुजान ॥

निहचे कर गुर चरन भज, होवत है कल्यान ॥

गुरू और हरि में कोई अंतर नहीं है, श्रेष्ठ पुरषों ने कहा है, कि निश्चय कर गुरु के चरणों में जुड़ने से कल्याण होता है।

गुर समान नहीं और जग, जानत संत सुजान ॥

कहि रविदास गुर चरन को, करत सदा ही ध्यान ॥

सूझवान संत यह जानते हैं, कि गुरू के समान इस संसार में अन्य कोई नहीं है, सतगुरु रविदास महाराज जी बखान करते हैं, कि जीव को हमेशा ही

गुरू के चरणों में ध्यान लगाना चाहिए।

****

"भादरों"

भादरों भरम भुलाइया, माया संग प्यार॥

गुर बिन शांत ना पाए है, जनम मरन में बारंबार॥

भादों के महीने भाव मानव जन्म, भ्रम में लगकर, प्रभु को भूल कर, माया से प्रेम करता है, गुरू के बिना जीव को शांति नहीं मिलती और जीव बार बार जन्म लेता और मरता है।

जिन्हां विसारिया राम नाम, गुर चरनी नहीं प्यार॥

धृग तिनां का जीवणा, कांहू आए संसार॥

जिन जीवों ने राम नाम को भुलाकर, गुरु चरणों से प्यार नहीं, किया उनका जीवन धृग है। वे संसार में क्यों आए हैं ?

भवि जल मांहि भवंदियां, ना उरवार न पार॥

गुर चरनन का आसरा, जिन मन लीना धार॥

संसार रूपी भव-सागर में तैरते हुए कोई किनारा नहीं मिलता भाव लोक-परलोक में सुख नहीं मिलता। जिन जीवों ने गुरु चरणों को मन में धारण कर लिया वह गुरु चरणों को प्रणाम करके भव-सागर को पार कर जाते हैं।

कर डंडोत गुर चरन में, भवनिध उतरे पार॥

गुरुदेव गुरु समझ के, करीं शुकर विचार॥

जीव गुरू चरणों को नमस्कार करके, भव-सागर से पार हो जाता है। गुरू देव को गुरू समझकर उसका शुक्राना कर और शुभ विचार कर।

बन्दना भगती छठी ऐह, करे शिश वडभाग॥

अवर करम सभ त्याग कर, गुर की चरनी लाग॥

वन्दना भक्ति छठी है, जिसको भाग्यवान् सेवक करता है। हे! जीव अन्य सभी कर्म त्याग कर गुरू के चरणों में लग।

गुर के चरन बहु प्रेम कर, माया मोह त्याग ॥

बिन गुर भगत न थिर कछू, जगत पसारा बाग ॥

गुरू के चरण-कमलों में प्रेम कर और मोह माया का त्याग कर। गुरू की भक्ति के बिना और कुछ स्थिर नहीं है। यह संसार झूठा बाग है।

पूरन पुन्न प्रताप ते, जागियो इसो बराग ॥

सोएयो मोह की नींद में, गुर किरपा भयो सुजाग ॥

पिछले किए हुए पुण्यों के कारण, जीव के अंदर वैराग्य जागता है, जीव मोह की निद्रा में सोया है, पर गुरू की कृपा से जाग सकता है।

रविदास गुरु चरन को, तूं कभी नहीं त्याग ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि हे जीव! तू गुरू चरणों को कभी भी न त्याग।

****

"अस्सू"

अस्सू आसां पूरीयां, जब गुर भये दियाल ॥

चरनी लावो दास को, करो प्रभू प्रतिपाल ॥

अस्सू के महीने में जीव की सारी इच्छाएँ पूरी हो जाती है, सारे संसार की पालना करने वाले हे प्रभु जी अपने दास को भी अपने चरणों से लगा लो।

प्रेम तार गुरनाम मन, गल पावो माल ॥

दर्शन कर गुर चरन को, तब ही भये निहाल ॥

प्रेम की तार में पिरोकर गुरू के नाम की माला गले में डाल। गुरू चरणों के दर्शन करने से जीव निहाल हो जाता है।

गुर चरनी लग भगत कर, त्याग मोह का जाल ॥

गुर भगती तब पाईए, जो होवे लिखिया भाग ॥

हे जीव! गुरू के चरणों से भक्ति करके, मोह का जाल त्याग दे, गुरू की भक्ति तब ही मिलती है, जब जीव के भाग में लिखा हो।

दासा भगती ऐही है, सपतम जानो लाल ॥

करो अभी पछताओगे, फिर हाथ ना आवै काल ॥

यही प्रभु की दास भक्ति सातवीं है, इसको जानो। प्रभु की भक्ति करो, नहीं तो पछताओगे, फिर दोबारा मानव जन्म हाथ नहीं आएगा।

ऐह दासा भगती कीनी विरले वीर ॥

सवास, सवास आज्ञा राखियो धीर ॥

यही दास भक्ति किसी विरले पुरुष ने की है। जो श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन कर, उसकी आज्ञा में रहता है।

रहे सदा विच आज्ञा, एहो भगत महान ॥

दासा भगती ऐही है, दासन दास बिखान ॥

प्रभु के हुक्म में रहना, यह भक्ति महान् है, यही दासा भक्ति है जो प्रभु के दासों का दास समझा जाता है।

बुध सुध तब्ब होए है, पावै निरमल ज्ञान ॥

अस्सू पूरन आस सब, गुरूदेव विखियान ॥

जीव को विवेक, बुद्धि और सूझ उस समय होती है, जब प्रभु के निर्मल ज्ञान की प्राप्ति होती है। गुरूदेव जी फ़रमाते हैं, कि अस्सू के महीने प्रभु का सिमरन करने से सारी इच्छाएँ पूर्ण होती है।

रविदास गुरू चरनन का, सदा करत है ध्यान ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी फरमाते हैं, कि जीव को हमेशा गुरू के चरणों का ध्यान करना चाहिए।

****

"कतक"

कतक कर्म त्याग कर, भगत करो गुरदेव ॥

सोहं सोहं जपंदिया, कर संतन की सेव ॥

कार्तिक का महीना भाव मानव जन्म में जीव को कर्मों का त्याग कर,

गुरूदेव की भक्ति करनी चाहिए। सोहं–सोहं का जाप करते हुए संतों की सेवा करनी चाहिए।

मात, तात और भ्रात ते, प्रिय जान गुरदेव ॥
और सखा नहि जगत में, जैसे है गुरदेव ॥

माता पिता और भाई सभी से प्यारा, गुरूदेव को जानना चाहिए। संसार में गुरूदेव जैसा मित्र कोई और नहीं है ।

सखा भगत ऐह अशटमी, कीती अर्जन देव ॥
सखा जान गुर भगत कर, त्याग करो अहंमेव ॥

आठवीं सखा भक्ति है, जो अर्जुन ने की है। जीव को गुरू को सहायक मानते हुए, भक्ति कर, अहंकार का त्याग करना चाहिए।

काम क्रोध हंकार तज्ज, तब्ब कछू पावै भेव ॥
सखा भगत सुभाव यह, जिम जल, दूध मलेव ॥

काम, क्रोध, अहंकार त्याग कर, भक्ति करके, जीव, प्रभु के भेद को पाता है। सखा भक्ति में, जीव को प्रभु से इस प्रकार एक होना चाहिए, जैसे पानी और दूध एक हो जाते है ।

सरब करम को त्याग कर, हरि गुर जप दिन रैन ॥
बाझह नीर जिम मीन को, आवत नांही चैन ॥

सभी कर्मों को त्याग कर, हे जीव! दिन रात हरि का सिमरन कर। जैसे मछली पानी के बिना नहीं रह सकती, इसी प्रकार प्रभु प्रेमी जीव, प्रभु के बिना तू नहीं रह सकता।

चकवी करे विलाम जिम, कब ऐह जावे रैन ॥
चंद चकोर को प्रीत जिम, मोर मुगध घन बैन ॥

जैसे चकवी विलाप करता है कि कब रात समाप्त हो और वह अपने प्रीतम को प्रभात समय मिले। चकोर की प्रीति जैसे चंद्रमा से है, जैसे जंगली मोर की प्रीति बादलों से है, इसी तरह की प्रीति जीव को प्रभु से करनी चाहिए।

सवास, सवास नहीं बिसरे, जिऊं बच्छरे को थैन ॥
जिम कामणि प्रसंन्न अति, पती को देखत नैन ॥

जीव को श्वास-श्वास प्रभु को नहीं भुलाना चाहिए जैसे बछड़ा दूध को नहीं भूल सकता। जैसे स्त्री पति को देखकर प्रसन्न होती है, इसी प्रकार जीव रूपी स्त्री प्रभु पति के दर्शन करके प्रसन्न होती है।

कतक सवेर काम सभ, जब गुर करना ऐन॥
रविदास गुरूदेव चरन को, धोए धोए कर पैन॥

कतक के महीने में जब गुरू कृपा करते हैं, जीव के सारे कर्म सफल हो जाते है। सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं, कि जीव को गुरूदेव के चरण धोकर पीने चाहिए।

****

"मघ्घर"

चड़िया मघ्घर हे सखी, गावो प्रभ के गीत॥
संता संगत पाए कर, गुरूदेव सिमरो नीत॥

हे सखी, मघ्घर का महीना चढ़ा है, प्रभु के गीत गाओ और संतों की संगत में जाकर प्रतिदिन गुरुदेव का सिमरन करो।

तन, मन, धन सभ अरप कर, ऐसी करो प्रीत॥
त्याग लोभ मोह अहंकार सभ, गुरूदेव की करो प्रीत॥

प्रभु के आगे अपना तन मन और धन सब कुछ अर्पण करके ऐसी सच्ची प्रीति करो और लोभ, मोह, अहंकार आदि सबका त्याग कर, गुरूदेव से प्रीति करो।

गौण वाक सभ त्याग कर, संत वचन धर चीत॥
तन मन धन ऐह हंकार, आपणे कछहु ना मान॥

व्यर्थ की बातों को छोड़कर, संतों के वचनों को, मन में धारण करो। तन, मन का अहंकार छोड़कर, अपना कुछ भी न समझ।

गर्भ करत जो इनसे, सो नर है अनजाण॥
आप कछहू ना होत है, देणहार हरि धाम॥

जो जीव तन, मन और धन का अहंकार करता है, वह अंजान है। अपने

आप जीव के पास कुछ भी नहीं हो सकता, सब कुछ देने वाला प्रभु स्वय है।

मैं कीया मैं करत हूँ, कूड़ा करहि माण॥

हरि का दीया सो गुर दीया, तैं की दीया आन॥

जीव अहंकार करता हुआ कहता है, कि मैंने यह किया और करता हूँ जो हरि ने बख्शीश किया है, वही गुरू ने बख्शीश किया है। हे जीव, तू प्रभु को क्या दे सकता है ?

तेरा इक हंकार है, अर्पण तिस को मान॥

नव प्रकार दी भगत ऐह, सत गुरदेव बिखान॥

जीव तुम में एक अंहकार है, तू प्रभु को क्या अर्पण कर सकता है ? भाव कुछ अर्पण नहीं कर सकता। नौ प्रकार की भक्ति यह है, जो गुरुदेव ने ब्यान की है।

जन रविदास करे भगत जो, शुद्ध भयो तिस मान॥

सतगुरु रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जो जीव प्रभु की भक्तिकरता है, वह जीव पवित्र और महान् है।

****

"पोह"

मघ्घर पूरा भया जब, तब चड़िया पोह मास॥

सोहं नाम तूं सिमर नित जग ते होए उदास॥

जब मघ्घर माह पूरा हो गया, तो पोह का माह चढ़ा। हर रोज़ सोहं शब्द का सिमरन करने से, जीव, संसार से, उपराम हो जाता है।

अवर कामना सर्ब तज, सतगुर की कर आस॥

सतगुर शरणी लगियां, पाप होत सब नास॥

और सभी कामनाएँ छोड़कर, केवल सतगुरू की आशा कर। सतगुरू की शरण में जाने से, सारे पापों का, नाश हो जाता है।

सरवण करत गुरां ते, साधन ज्ञान बिलास॥

वचन धार गुरदेव उर, सभ संसे होवन नास ॥

गुरू से वचन श्रवण कर, जीव को ज्ञान की प्राप्ति होती है। गुरूदेव के वचनों को, हृदय में, धारण करने से, सब भ्रमों का नाश होता है।

सतनाम उपदेश गुर, कर तूं दृढ़ अभ्यास ॥

वचन गुरू परकाश कर, होत भरम सभ नास ॥

गुरू से सतनाम का उपदेश श्रवण कर दृढ़ निश्चय से उसका अभ्यास कर। गुरू के वचनों पर चलने से, ब्रह्मज्ञान का प्रकाश होने के कारण, सब भ्रमों का नाश हो जाता है।

सरवण इस का नाम है, सुण सतनाम विचार ॥

सत सरूप परमात्मा, मिथिया जगत आसार ॥

हे जीव! तू प्रभु के सतनाम को श्रवण करके, उसका विचार कर, जिससे तुझे प्रभु का सत्य स्वरूप अनुभव होगा और संसार पसारा मिथ्या भाव झूठा प्रतीत होगा।

तिस प्रभ को तूं सिमर मन, जो है सरब आधार ॥

सतगुर शरनी लग कर, समझो सार आसार ॥

हे जीव! तू प्रभु का सिमरन कर, जो सारे संसार का आधार है, सतगुरु की शरण में जाकर लोक-परलोक को समझ।

प्रभ बिन अवर ना जाण कछहू, सब इक ब्रहंम पसार ॥

असथावर जंगम आदि सभ, जीया जंत निरधार ॥

प्रभु के बिना, संसार में, और कुछ सत्य नहीं है। सब तरफ उस प्रभु का ही प्रसार है। पर्वत, वृक्ष और सारे जीव प्रभु के आदेश में है।

जन रविदास पोह बीतिआ अब सुन माघ विचार ॥

जन गुरुदेव हरि भेटिया, भवजल उतरे पार ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जब पौष का महीना बीत जाता है, फिर माघ के महीने की विचार करनी चाहिए। जिस जीव का, गुरुदेव से मिलाप हो जाता है, वह संसार के भव-सागर से पार हो जाता है।

****

माघ'

माघ महीना धर्म का, दृढ़ कर तूं सतसंग॥

संतां संग प्रीत कर, कदी ना होवे भंग॥

माघ महीना धर्म पर चलने का है। इस लिए जीव को सतसंग करना चाहिए और संतों से प्रीति करनी चाहिए, जो प्रीति कभी भी नहीं टूटती।

धूड़ संत के चरन की, सोई श्रेष्ट है गंग॥

पापां की मल उतरे, चढ़े नाम का रंग॥

संतों के चरण कमलों की धूल, गंगा से भी श्रेष्ठ है, जिस से पापों रूपी मैल उतर जाती है और नाम का सदैव रंग चढ़ जाता है।

मनमुख संग ना कीजीए, पडत भजन में भंग॥

दु:ख बिनसे सुख लाभ होवे, गुरमुख जिन के संग॥

मनमुखों की संगति करने से, भजन में विघ्न पढ़ता है। इस लिए मनमुखों की संगति कभी भी नहीं करनी चाहिए, गुरमुखों की संगत करने से, दुख दूर हो जाते हैं और सुखों की प्राप्ति होती है।

नाम जपो मिल गुरमुखां, जो है सदा आसंग॥

तूं वी प्रभ ते भिन्न नहीं, जिऊं जल मांहि तारंग॥

गुरमुखों से मिलकर, नाम जपने से, प्रभु हमेशा अंग संग होता है। जीव तू प्रभु से अलग नहीं है जैसे तरंग पानी से अलग नहीं है।

सोहं नाम रग रग रचे, नाम का चड़े जब रंग॥

पंचो वैरी त्याग कर, तब होए निसंग॥

प्रभु के नाम का सिमरन करने से, प्रभु, जीव को अपने अंदर समाया हुआ अनुभव होता है, फिर नाम का रंग चढ़ जाता है और पाँच विकारों रूपी दुश्मनों को त्याग कर जीव को प्रभु का रंग चढ़ जाता है।

गुरु प्रेमी गुर की शरण गहि, करत खूब विचार॥

गुरुदेव के प्रताप बिन, समझे न सार असार॥

गुरू प्रेमी, गुरू की शरण में जाकर, ब्रह्मज्ञान के विचार करते हैं। गुरूदेव के प्रताप के बिना जीव लोक-परलोक को नहीं समझ सकता।

करके दृढ़ उपदेश गुर, भवनिधि उतरे पार ॥

मन्द भाग बिन सतगुरां, डुबण भव निध धार ॥

गुरू के उपदेश पर, निश्चय करके चलने से जीव भवसागर से पार उतरता है, सतगुरू की संगति के बिना जीव के भाग्य घटिया हैं और वह भवसागर पार नहीं कर सकता भाव उसे परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती।

सतगुर के प्रसादि हम, जानिया आत्म राम ॥

जानण जोग सु जानिया, जो आत्म निज धाम ॥

सतगुरु की कृपा से, मैंने, अपने अंदर, प्रभु को जाना है। उस प्रभु को, अपने अंदर जानकर, उसके निज घर को, जान लिया है।

मिटिया गुमान गुर दया ते, पाया अब विसराम ॥

पुन्ने सगल मनोरथां, रहियो ना बाकी काम ॥

गुरू की कृपा से, नाम में वृत्ति लगाने से अंहकार नष्ट हो जाता है, सभी मनोरथ पूरे हो जाते हैं और कोई इच्छा नहीं रहती।

अनेक जन्म दुःख पाए कर, आए गुर की साम ॥

जिहड़े विछड़े तिह मिले, भये अभ आत्म राम ॥

अनेक जन्मों में दुख भोगने के बाद, जीव, गुरू की शरण में आया है। जिस ज्योति से जीव बिछुड़ा था उससे उसका मिलाप हो जाता है।

सतगुर के भजन बिन, नही अवर कुछ काम ॥

इको सोहं सतनाम जीयो, सिमरो आठो जाम ॥

सतगुरु के भजन बिना अन्य किसी काम का कोई अर्थ नहीं है। एक प्रभु के सोहं सतनाम को, आठों पहर भाव हर समय स्मरण करना चाहिए।

सरवण कर गुर वचन को, निसचे कर उपदेश ॥

निसवासर अभ्यास कर, तज कर सगल कलेश ॥

गुरू के उपदेश और वचनों को श्रवण कर उस पर चलकर नित्य प्रति नाम का अभ्यास करने से, सारे कलेश खत्म हो जाते है।

बुद्बुदा फेन तरंग का, जल ते भिन्न ना लेस ॥

सब भूखण जिन कनक के, कंचन बिन ना शेष ॥

जैसे पानी का बुलबुला पानी से अलग नहीं है, बल्कि पानी ही होता

है। उसी प्रकार सोने के गहने सोने से अलग नहीं होते।

घटि मिट माटी रूप सब, और ना कछहु विशेष॥

अनिक भांति पट जो भये, सूतर तिस का वेस॥

पाँच तत्त्वों से, सारे शरीर, प्रभु ने, एक समान बनाए है, किसी में कोई विशेष तत्त्व नहीं है, इसी प्रकार एक सूत से अनेक प्रकार के कपड़े बुने जाते हैं। इसी तरह ही प्रभु सारे जीवों में एक समान है।

रविदास गुरू चरन के, करहूं सदा आदेश॥

सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि जीव को हमेशा गुरू के चरणों को नमस्कार करना चाहिए।

****

''फगन''

चड़िया फागण मास जब, फूली सभ गुलजार॥

धरती सब हरियावली, सुंदर बाग बहार॥

फाल्गुन का महीना चढ़ने से, सारी प्रकृति गुलज़ार हो गई। सारी धरती हरियावली होने से बाग बहार सुंदर बन गए।

बुलबुल मसत बहार पर, भंवरा भई गुलजार॥

निवण फल बहु बाग में, गलगल, आम, आनार॥

बुलबुल बहारों पर मस्त हो गई। हर तरफ भंवरों के साथ गुलज़ार लग गई। बागों में गलगल, आम, अनार के फल लग गए।

गुरमुख गुर की शरण गहि, करते खूब विचार॥

सतगुर के परताप कर, समजे सार आसार॥

गुरमुख गुरु की शरण में बैठकर, प्रभु के नाम की विचार करते हैं। सतगुरों के प्रताप से, लोक परलोक की समझ ग्रहण करते हैं।

कर के दृढ़ उपदेश गुर, भव निध उतरे पार॥

मंद भाग बिन सतगुरां, डुबण भव निध धार॥

गुरू के उपदेश पर निश्चय करके चलने से, जीव भवसागर से, पार हो जाता है। दुर्भाग्य वाले जीव सतगुरों के बिना संसार के भवसागर में डूब

जाते हैं।

सतगुर के प्रसादि हम, जानिया आतम राम ॥

जानण योग सो जानिया, जो आत्म निज धाम ॥

सतगुरू की कृपा से मैंने जानने योग्य, आत्म राम को जानकर अपने अंदर ही निजधाम को प्राप्त कर लिया।

मिटिया गमन गुर दया ते, पाया अब बिसराम ॥

अनेक जनम दुःख पाए कर, आए गुर की शाम ॥

गुरू की कृपा से, नाम में विसराम (विश्राम) पाने से, जन्म मरण का चक्र समाप्त हो गया। अनेक जन्मों में दुख प्राप्त करने के बाद, जीव मानव जन्म में, गुरू की शरण में आकर सुख प्राप्त करता है।

जिहड़े विच्छड़े तिह मिलो, भये सो आतम राम ॥

जन रविदास गुर भजन बिन, नहीं अवर कछहु काम ॥

जिस जीव से प्रभु बिछड़ा था, उसकी प्राप्ति हो जाती है। सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जीव को गुरू के उपदेश पर चलकर, भजन करना चाहिए और सभी कामों को त्याग देना चाहिए।

गुरू चरनों का ध्यान कर, सुण बारां मासक उपदेश ॥

पढ़े सुणे जो प्रेम कर, होवे कल्याण हमेश ॥

गुरू चरणों की ओर ध्यान करके, जीव को बारह महीनों का उपदेश सुनना चाहिए। जो जीव बारह महीनों के महात्म को प्रेम से पढ़ेगा-सुनेगा, उस जीव का सदैव कल्याण होगा।

****

'दोहरा''

धरत अकाश को थापिया, रैन दिवस नितपाल ॥
सर्व जीव के करम जो, साहिब करे ख्याल ॥
आप अपना सभ पावते, किरत धुर परवान ॥
पवन पानी सवंतर के, रखशक भये भगवान ॥
रविदास कहे भज नाम को, निरभैपावै वास ॥
तेरा फल तुझ को मिले, होवे बंद खलास ॥

प्रभु ने धरती और आकाश को स्थापित किया है और दिन और रात वह सारे संसार की पालना करता है। प्रभु सब जीवों पर कृपा कर पालन करता है। अपने किए कर्मों अनुसार सारे जीव फल पाते हैं। जीवों की किरत कमाई प्रभु दरबार में प्रवाण होती है। हवा, पानी और आग में भाव हर ओर प्रभु जीव की रक्षा करता है। सतगुरू रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि हे जीव! तू प्रभु सिमरन कर निर्भय पद को प्राप्त करता है। जीव! तेरे किए हुए कर्मों का फल तुझे मिलेगा। तू प्रभु का सिमरन कर सब बंधनों से मुक्त हो जाएगा।

''सांद बाणी''

सोहं सांद सोलखिआ, सरब घटि।
मिल गुर नाम लगाइयो रट्ट॥

सोहं का जाप करना ही श्रेष्ठ भाग्यों वाला छंद है, जिससे जीव हर ओर प्रभु को अनुभव करता है। पर नाम की रट की ऐसी अवस्था, गुरू की कृपा से ही प्राप्त होती है।

चौंक चतर जग जाण महान।
पूरन हार जगत सो प्राण॥

प्रभु का प्रसार चौंक पूरना है और प्रभु ही सारे संसार का सहारा है।

नानके, मापे, साक सोहेले।
कर किरपा सतगुर प्रभ मेले॥

जब सतगुरू कृपा कर प्रभु से मिला देता है तो ननिहाल, माता-पिता, सगे-संबंधी सारे जीव के मित्र बन जाते है।

हाथ गाना, गणियो सो माल।

किया पुन्न दान रचन आकाल॥

प्रभु का नाम रूपी गाना जीव के पास श्रेष्ठ धन है। फिर अकाल पुरुष को पाकर जीव को और कोई पुण्य-दान करने की आवश्यकता नहीं।

कुंभ कमाल जनम, जन पाइयो।

सुरत शब्द आनाज मिलाइयो॥

कुंभ रूपी जीव ने, श्रेष्ठ जन्म प्राप्त किया है। वह सुरति-शब्द को जोड़कर अंदर से श्रेष्ठ खजाने से जुड़ा।

भर जल, कुंभ कारज में धरियो।

तिव कारज सोपूरण करियो॥

शरीर रूपी कुंभ में, प्रभु का नाम रूपी जल भरा है। यह श्रेष्ठ कार्य है। जिससे जीव के सभी कार्य संपूर्ण हो जाते है।

दीपक दिल, हंग तेल बिठाई।

सुरत मिला, उत्तो जोत जगाई॥

दिल रूपी दीपक में, प्रभु के नाम का तेल डाला है। सुरति प्रभु से लगाकर जोड़ ली है।

गुर भरवासे, सो संधूर।

नौं दर तों, नौं ग्रहि सभ दूर॥

गुरू के भरोसे पर रहना मानों सिंधूर डाला है, जिससे नौ दरवाज़े और नौ ग्रह दूर हो जाते है।

गुरमुख सांद, समझ सच सोई।

सभ कारज, प्रभ ओट लै होई॥

हे गुरमुख, यही प्रभु की सच्ची लगन है। सभी कार्य प्रभु का आश्रय लेकर पूरे हो जाते है।

खोपा कारज, समगरी घिओ।

इक दर खतम सोगंदी भयो ॥

प्रभु का नाम ही कार्य के लिए नारीयल है और प्रभु का नाम ही सामग्री रूपी घी है। प्रभु के दरबार में केवल नाम की सुगंधि आती है।

अब अंब, पत जगन जग्ग जाग।

सुरत शब्द मिल मंगल राग ॥

आम, पत्ते, यज्ञ आदि सारी सामग्री सुरति शब्द से मिलकर प्रभु के राग गाना है।

सब मिल प्रण, प्राण बिठाओ।

संग गुर सति विशवास जमाओ ॥

सभी मिलकर अपने मन में यह प्रण करो कि गुरू की संगत में जाकर परमात्मा पर पूर्ण विश्वास करें।।

कहे रविदास भज हरि नाम।

प्रभ सो ध्यान, सफल सब काम ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं कि हे जीव! तू हरि का नाम जप, प्रभु का ध्यान करने से, तेरे सारे कार्य सफल होंगे।

*****

"अनमोल वचन"

(मिलनी के समय)

मेल मिलाइया दाते, मिलिया मिलणे के योग ॥
दिल जे मिलावे दाता, जांदे विछोड़े वाले रोग ॥
खुशीयां सतगुर बख्शे, उमरां दे जांदे ने वियोग ॥
तन, मन वारिया जावे, मिलणी आदर संग होग ॥
किरपा पग्ग मसतक राखो, सतगुर सरब सिर योग ॥
प्रभ तों मिल के मांगो, पवे ना विछोड़े वाला भोग ॥
कहि रविदास पुकारै, जनमां दे जांदे सारे सोग ॥

प्रभु ने कृपा कर मेल मिलाया, जिस कारण मिलनी का योग बना। जब प्रभु कृपा कर दिलों को मिला देता है, तो वियोग रूपी सभी रोग समाप्त हो जाते हैं। जब सत्गुरु कृपा कर खुशियां बरसा देते हैं तो जन्मो के वियोग समाप्त हो जाते हैं। तन मन सतगुरु को समर्पित करने से, मिलन (मेल) आदर संग होता है। प्रभु जी की कृपा रूपी पगड़ी सिर पर रख कर, सर्व संतोष से दो सिरों के मिलाप हो जाते हैं। प्रभु के चरणों में मिल कर अरदास करो कि कभी बिछोड़ा न हो। सतगुरु रविदास महाराज जी जीवों को पुकार कर समझाते हैं, कि प्रभु का स्मरण करने से जन्म-जन्म के दुख समाप्त हो जाते हैं।

"शादी उपदेश"

॥ एक ओंकार सोहं सतनाम जीओ ॥

॥ दवैइया छंद ॥

"पहिलड़ी लांव"

पहिलड़ी लांव हरि दर्शन गुरां दा, जावे दूर बुलाई ॥
दीआ मेल हरि दया धार के, गुज्झी रंमझ चलाई ॥

पहिलड़ी लांव में, हरि स्वरूप गुरू के दर्शन करने से दुख दूर हो जाते हैं, जब प्रभु दया कर मिलाप करा देता है, उस समय गहरी रमज़ की समझ आती है, भाव ज्ञान हो जाता है।

अनहद शब्द सुणे मन थिर कर, मिट गए सरब अंधेसे ॥

किरपा सिंध गुर मिलिया पूरा, लिव लागी हरि भेसे ॥

प्रभु के नाम में मन स्थिर करने से अनहद शब्द सुनाई देता है। जिससे सारे भ्रम नष्ट हो जाते हैं। प्रभु की कृपा करने से पूर्ण गुरू का मिलाप होता है और जीव की लिव लग जाती है।

पूरे गुर ते शब्द सच पाऐआ, रतन अमोलक मीता ॥

सुणदिआं ही मन मसत दीवाना, शब्द गुरां ने कीता ॥

पूरे गुरू से शब्द प्राप्त कर, जीव सच्चे प्रभु से, जुड़ कर, प्रभु का अमूल्य नाम रूपी रत्न प्राप्त कर लेता है, गुरू के शब्द को सुनते ही, जीव का मन, प्रभु के मिलाप में मस्त दीवाना हो जाता है।

महांवाक सुण, सुण के गुरू दे, शरधा प्रीत मन आवै ॥

कहि रविदास ऐह है लांव पहिलड़ी, चौंसठ्ठ तीरथ नहावै ॥

गुरू के महावाक को सुनकर, जीव के मन में, प्रभु के प्रति श्रद्धा और प्रेम आ जाता है। सतगुरू रविदास जी महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि यह पहिलड़ी लांव है जिस से जीव चौंहसठ (64) तीर्थों में स्नान कर लेता है।

"दूजड़ी लांव"

दूजड़ी लांव प्रेम परीती, सुरत शब्द मिलाई ॥

सतगुर कीती परम परीती, दरगह में सुख पाई ॥

दूसरी लांव में जीव प्रभु से प्रेम करता है, जिससे शब्द और सुरति का मिलाप हो जाता है। सतगुरू से प्रीति करने से, जीव को प्रभु की दरगाह में सुख प्राप्त होता है।

सरब मनोरथ तिस दर ते पाउ, शरण परै को तारै ॥

हुकम अन्दर है चार पदार्थ, तन, मन जेकर वारे ॥

सभी मनोरथ प्रभु के दरबार पर जाने से पूरे होते हैं और प्रभु की शरण ग्रहण करने से जीव मोक्ष प्राप्त करता है। प्रभु के हुक्म में चार पदार्थ (कर्म, अर्थ, धर्म, मोक्ष) हैं, जो तन-मन, प्रभु के समक्ष समर्पित करने से

प्राप्त होते हैं।

सतगुर शरण रहि वडभागी, सहिंसे सगल गुआऐ॥

सतगुर दाता प्रभ संग राता, निस दिन हरि लिव लाए॥

सतगुरू की शरण में रहने से बड़े, भाग्यों वाला जीव, सभी भ्रमों को समाप्त कर लेता है। सतगुरू दाता है, जो प्रभु से एक हो चुका है। जो जीवों की हर रोज़ प्रभु से लिव लगाता है।

भरम भुलावा मिटिया दावा, चाल गुरां दी चाली॥

कहि रविदास ऐह लांव दूजड़ी, बचन गुरां दे पाली॥

गुरू के बताए हुए मार्ग पर चलने से, जीव के सारे भ्रम और दावे समाप्त हो जाते है। सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि यह दूसरी लांव है जिसकी गुरू के वचनों पर चलकर पालना होती है।

''तीजड़ी लांव''

तीजड़ी लांव अवरन दोष ते, रहित भया मन मेरा॥

हरि घटि दे विच ऐक समाना, सो घर पाया डेरा॥

तीसरी लांव में अवरण दोष से मेरा मन रहित हो गया। हरि सारी सृष्टि में समाया हुआ है। उसका स्थान मैंने अपने अंदर ही देख लिया है। जिस जीव का मन एकचित्त होकर प्रभु के दर्शनों के लिए तड़पता है, उस पर प्रभु की कृपा हो जाती है।

परम प्रभू परमेश्वर जाना, तां सुख मिले उपारै॥

मन में सच मंगल सुख होए, जो लोचा मन धारै॥

परम प्रभु परमेश्वर की कृपा से, अपार सुखों की प्राप्ति होती है। मन में सच्चे मंगलमयी प्रभु के गीत गाने से, सच्चा सुख प्राप्त होता है।

मंगल दे मंगल नित गावां, ऐहो अमृत धारा॥

हरि, हरि संग लिव जुड़ी जुड़ंदी, साचा ऐह सहारा॥

मैं प्रभु के प्रेम में, मंगल से मंगलमयी गुण गाता हूँ। यही मेरे अंदर प्रभु की अमृत धारा है। हरि हरि से लिव जुड़ने से, सच्चा सहारा प्राप्त होता है।

सुंदर शब्द आमोलक दर्शन, जो सतगुर दर आवै ॥
कहि रविदास सो लांव तीसरी, सुरत गगन चड़ जावे ॥

सतगुरू के दर पर आने से, जीव को सुंदर शब्द सुनाई देता है। सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि वह तीसरी लांव है, जब जीव सतगुरू की कृपा से सुरति शब्द से जुड़कर दशम द्वार रूपी गगन पर पहुँच जाती है।

"चौथड़ी लांव"

चौथड़ी लांव रतन हरि जाना, सुख संपति घर आऐ ॥
आसा, मनसा सतगुर पूरे, जै, जै शब्द अलायि ॥

चौथी लांव में जब जीव हरि के नाम अमूल्य रत्न को जान लेता है, तब सारे सुख और खज़ाने जीव के घर आ जाते हैं। सारी इच्छाएँ और सारे मंतव्य सतगुरू की कृपा से पूर्ण हो जाते हैं और जीव प्रभु की जै-जैकार करता हुआ, सतगुरू के शब्द का अभ्यास करता है।

धीरे, धीरे गई पहुँच हुण, हो सतगुर दी दासी ॥
ना आवे, ना जावे कित वल, मिलिआ पुरख अविनाशी ॥

सहज अवस्था में जीव रूपी स्त्री सतगुरू की दासी बनकर, प्रभु का ध्यान लगाकर प्रभु के चरणों में पहुँच जाती है। फिर यह जीव न पैदा होता है और न मरता है। इसे अविनाशी पुरुष (प्रभु) की प्राप्ति हो जाती है।

सति संतोख भया मन मेरे, सतगुर वचन सुनावै ॥
आया बेराग, मिलिया अविनाशी, जोड़ी जूड़ी सुहावै ॥

सतगुरू के वचन धारण करने से, जीव के मत को सत्य संतोष आ जाता है। फिर जीव के मन में वैराग्य आ जाता है और उसे अविनाशी प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। फिर वह जीव रूपी स्त्री पति परमात्मा को पाकर सुहागिन बन जाती है।

मन मंदर मांहै चों उपजिया, प्रीत प्रभू संग लाई ॥
कहि रविदास सति लांव चौथड़ी, पुरखे पुरख मिलाई ॥

जीव, मन रूपी मंदिर में विराजमान प्रभु से प्रीति लगाता है। सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि यह सच्ची चौथी लांव है, जिस से जीव का प्रभु (पुरुष) से मिलाप हो जाता है।

"सुहाग उसतत"

॥ एक ओंकार सोहं सतनाम जीओ ॥

सुरत सुहागण गुरू देव प्यारी, सोहं नाम संग खेली ॥
बहुत जनम दे विच्छड़िआं नूं, आण गुरां ने मेली ॥
झूठी खेड बिसर गई तन ते, बाजीगर सिऊं मेली ॥
सच्चा पुरख मिलाया परमेश्वर, तिस संग लाड लडेली ॥
आप समान आपणे कीती, आज्ञान नींद ते जागी ॥
भुल्ली चुक्की रसते पै गई, आतम सिऊं लिव लागी ॥
सरब विआपी सतगुर मेरा, सब दा करे सुधार ॥
कहे रविदास मन भया दीवाना, मिलिया अमृत धार ॥

गुरूदेव से प्रेम कर, सुरति शब्द से मिलकर, सुहागिन हो जाती है और प्रभु के नाम से जुड़कर आनंद लेती है। बहुत जन्मों से जीव रूपी स्त्री परमात्मा से बिछुड़ी हुई थी, जिसे गुरूओं ने आकर परमात्मा से मिला दिया। सारी दुनिया का झूठा खेल इस दुनियां में खत्म हो गया जब सतगुरु ने परमात्मा बाज़ीगर से सुरति मिला दी, जिससे उसका सच्चे पुरुष से मिलाप हो गया, जिस से मिलकर जीव रूपी स्त्री ब्रह्मनंद लेती है। उसने जीव रूपी स्त्री को, अज्ञानता से जगा कर, अपने समान कर लिया। वह जीव रूपी स्त्री भूले भटके मार्ग को छोड़कर सही मार्ग की ओर अग्रसर ही गई तथा उसकी आत्मा प्रभु के साथ जुड़ गई। सतगुरू मेरा सर्वव्यापक है जो सब जीवों का सुधार करता है। सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जब जीव का मन प्रभु का दीवाना हो जाता है, फिर इसको अपने अंदर से ही प्रभु की अमृत धारा प्राप्त होती है।

*****

“मंगलाचार”

“मंगलाचार पहिला”

हरि, हरि नाम धियाओ, सदा मन प्रेम कर ॥

लोभ, मोह, हंकार, दूत, जंम दूर हरि ॥

जीव को हमेशा मन में हरि हरि नाम स्मरण करना चाहिए। हरि की कृपा से लोभ, मोह, अहंकार, दूत और यमदूत दूर हो जाते हैं।

सच, शील, संतोख, सदा दृढ़ कीजीए ॥

अमृत हरि का नाम, प्रेम कर पीजीए ॥

जीव को मन में हमेशा सत्य, शील और संतोष निश्चित धारण करना चाहिए। हरि का नाम रूपी अमृत जीव को प्रेम सहित पीना चाहिए।

संतां संग निवास,सदा चित्त लोड़ीए ॥

मनमुख दुष्टा संगत, तों मन मोड़ीए ॥

संतों की संगत के लिए, जीव को हमेशा, मन में, इच्छा रखनी चाहिए। मनमुखों और दुष्टों की संगत से मन को हटाना चाहिए।

मनमुख चित्त कठोर, पत्थर सम जानीए ॥

भीजत नाहन कभी, रहे विच पानीए ॥

मनमुख जीव का मन, पत्थर की तरह कठोर समझना चाहिए, जैसे पत्थर पानी में रहते हुए भी नहीं भीगता है, इसी प्रकार मनमुख जीव का मन भी दुष्टों की संगत में नहीं भीगता।

तजि कठोर का संग, सदा गुर शरण गहु ॥

गुर चरनन में ध्यान, सदा मुख राम कहु ॥

कठोर जीव की संगत छोड़ कर, जीव को हमेशा गुरू की शरण में रहना चाहिए, हमेशा ही गुरू चरणों का ध्यान कर मुख से प्रभु का नाम उच्चारण करना चाहिए।

निज पती साथ प्रीत, सदा मन कीजीए ॥

तन, मन अरपे तांह, सदा सुख लीजीए ॥

निज पति परमात्मा के साथ सच्चे मन से प्रीति करनी चाहिए! प्रभु के आगे तन, मन अर्थात् अपना सर्वस्व अर्पण करने से मनुष्य को सुख प्राप्ति होता है।

निज पति साथ प्रीति साई सुहागणी।
पति बिन आन न हेरे सा बडभागणी।।

स्दैव प्रभु पति के साथ प्रेम करने से जीव रूपी स्त्री सुहागण बन जाती है।प्रभु पति के बगैर कोई जीव रूपी स्त्री वडे भागयवान नहीं है।

जिन धन पती परमेश्वर, जानयो, है सही॥
सदा सुहागण नार, पाए दुःख ना कही॥

जिस जीव रूपी स्त्री के पास पति परमेश्वर का खज़ाना है, वह हमेशा सुहागन रहती है और उसको कोई भी दुख नहीं सताता।

कहि रविदास पुकारे, जपयो नाम दोए॥
हरि कारज सो एक, सदा सुख माणो दोए॥

सतगुरू रविदास महाराज जी पुकार कर कहते हैं, कि पति-पत्नी दोनों को प्रभु का नाम जपना चाहिए। हरि का नाम जपने रूपी कार्य एक श्रेष्ठ कार्य है, जिसका स्मरण कर दोनों पति-पत्नी हमेशा सुख भोगते हैं।

"मंगलाचार दूसरा"

दूजा भाओ मिटाओ, मंगल दूसरा॥
बण, तृण परबत, पूर रहयो, प्रभ हूंसरा॥

मन से द्वैत (द्वेष) को समाप्त करना दूसरा मंगलाचार है। वनों, तीर्थों और पर्वतों भाव हर तरफ प्रभु समाया हुआ है।

घटि, घटि ऐको, अलख, पसारा पसरिया॥
गुरमुख जाने ज्ञान, ना जाने असरिया॥

घट-घट में भाव हर तरफ प्रभु का पासार पसरा हुआ है। गुरमुख केवल प्रभु के ब्रह्म ज्ञान को जानता है और कुछ नहीं जानता।

सभ घटि पूरण ब्रहम, जान गुर पाएके ॥
रहे सदा आनन्द, तास गुण गाए के ॥

गुरू को प्राप्त कर जीव जानता है कि घट-घट में हर तरफ ब्रह्म समाया हुआ है। उसके गुण गाकर जीव सदा आनंद में रहता है।

जो हरि ते बे-मुख, सदा दुःख पायि है ॥
मानस जनम आमोल, बिअरथ गुआयि है ॥

जो प्रभु को भूले हुए हैं, वे हमेशा दुख पाते हैं और अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा देते है।

गुर बिन लहे ना धीर, पीर बहु पायि है ॥
लहे अनादर सरब, ठऊर जहा जायि है ॥

गुरू के बिना धैर्य नहीं आता और जीव बहुत दुख पाता है। प्रभु को भूल कर जीव जहाँ भी जाता है, उसको सम्मान प्राप्त नहीं होता।

जब गुर भये दियाल, सो चरनी लाया ॥
सतगुर काटे बंधन, नाम जपाया ॥

जब गुरू दयालु होते हैं तो वे जीव को अपने चरणों में शरण देते हैं। सतगुरू कृपा कर सारे बंधन काट देते हैं और नाम जपाते है।

साध संग प्रताप, सदा सुख पाइए ॥
संतन के प्रताप, नाम हरि ध्याइये ॥

संतों की संगत के प्रताप के कारण जीव हमेशा सुख पाता है। संतों की कृपा से ही प्रभु का नाम स्मरण होता है।

संतन के प्रताप, पती प्रभ पाइए ॥
मिलिया अटल सुहाग, वियोग गवाइए ॥

संतों के प्रताप से पति परमेश्वर की प्राप्ति होती है, जिससे पति प्रभु रूपी अटल सुहाग मिलने से, वियोग समाप्त हो जाता है।

संगत तों आशीर्वाद, इस जोड़ीए ॥
कहि रविदास इन संग, सदा सुख लोड़ीए ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं, कि जो जीव संगत से

आर्शीवाद लेकर, प्रभु से जुड़ जाता है, उसको हमेशा ही सुख प्राप्त होता है।

"मंगलाचार तीसरा"

रलि मिल सखीयां, मंगल गाया तीसरा॥

सदा जपो हरि नाम, ना कबहू बीसरा॥

सखियों ने मिल जुल कर तीसरा मंगलाचार गाया। सदा हरि का नाम जपने से, जीव प्रभु को भूलता नहीं है।

सतगुर के लग चरन, सदा हरि गाईऐ॥

रिद्ध सिद्ध नौं निद्ध, सभी कछहू पाईऐ॥

सतगुरों के चरणों में लगकर, सदा हरि के गुण गाये जाते हैं और सभी रिद्धिया-सिद्धियां तथा नौ खज़ाने इत्यादि प्राप्त हो जाते हैं।

सतगुर के प्रसाद, अटल सुहाग है॥

सतगुर भये दिआल, तां जागियो भाग है॥

सतगुरू की कृपा से, अटल सुहाग की प्राप्ति होती है। सतगुरू के दर्शन करने से सारे पाप मिट जाते हैं।

सतगुर दर्शन पायि, मिटे अघ सरब ही॥

पाइयो शील निधान, मिटाए गरब ही॥

सतगुरू के दर्शन करने से सारे पाप नाश हो जाते हैं, प्रभु का नाम रूपी खज़ाना प्राप्त करने से, अहंकार नष्ट हो जाता है।

रहिया ना संसा मूल, जिन्ही गुर पाया॥

हिरदे भया प्रकाश, अज्ञान मिटाया॥

जिन्होंने गुरू को पा लिया, उनके भ्रम भी जड़ से नष्ट हो गए। मन में प्रभु के नाम का प्रकाश होने से अज्ञान रूपी अंधेरे का नाश हो गया।

बिन हरि नाम ना सार, कछहू संसार है॥

हरि का नाम ध्यावै, भवि निद्धि पार है॥

प्रभु के हरि नाम के बिना, जीव की, संसार में अन्य कोई भी चिन्ता नहीं करता। हरि का नाम स्मरण करने से जीव भवसागर से पार हो जाता है।

मंगल महां सो मंगल, हरि हरि नाम है॥
आठ पहिर मुख जपो, ऐही शुभ काम है॥

सब मंगलाचार में महामंगलाचार हरि का नाम है। आठ पहर भाव हर समय मुख में हरि के नाम का जाप करना सब से श्रेष्ठ काम है।

सच रविदास बतावे, नाम ना छोडीए॥
गुर चरनन में ध्यान, सदा मन जोड़ीए॥

सतगुरू रविदास महाराज जी सत्य बताते हैं कि प्रभु का नाम कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए और गुरू चरणों में ध्यान लगाकर मन को जोड़ना चाहिए।

"मंगलाचार चौथा"

मंगल चार आनन्द, सखी मुख गाया॥
कारज भया सुहेला, हरि हरि ध्याया॥

चौथा मंगलाचार गाने से आनंद की प्राप्ति होती है। हरि हरि नाम स्मरण करने से जीव का कार्य सफल हो जाता है।

धन और पिर की, प्रीत बणी इक सार है॥
घटा, छटा सम मिली, मीन जिम वार है॥

प्रभु के नाम रूपी धन से, जीव की उसी प्रकार सच्ची प्रीति बन जाती है, जैसे मछली की पानी से प्रीति है। पानी के बिना मछली अपना जीवन गंवा देती है। जीव भी प्रभु का स्मरण कर उसे सब में व्याप्त अनुभव करता है।

पिर संग पाए आनन्द, ना दुःख की लेस है॥
पती की आज्ञा में, जो रहे हमेश है॥

उसे प्रभु पति की संगत करके आनंद प्राप्ति होती है और दुखों का नाश होता है, जो जीव रूपी स्त्री प्रभु पति की आज्ञा में हमेशा रहती है।

पती परमेश्वर करके, जिन धन जाणिया ॥

सदा सुखी बहु नार, सरब सुख माणिया ॥

जो जीव रूपी स्त्री प्रभु पति को श्रेष्ठ कर जानती है, वह हमेशा सुखी रहती है और सब सुखों को भोगती है।

जिन पर सतगुर दयाल, सुखी बहु गाइए ॥

महिमा अपर अपार, ना कीमत पाइए ॥

जिन जीवों पर सतगुरू दयालु होते हैं, वे हमेशा सुख पूर्वक प्रभु के गुण गाते हैं। प्रभु की महिमा बेअंत है, उसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती।

सतगुर के संग, तेरे अवर वी केतड़े ॥

कर के दृढ़ प्रीत, प्रेम करो जेतड़े ॥

सतगुरू की संगत के कारण, सभी तम्हारे अपने बन जाते है। तुम सतगुरू से सच्ची प्रीति करो और शेष सभी से भी प्रेम करो।

कारज सब ही पूरे, सतगुर कर दीए ॥

पूरब पुन्न अनेक फल तिस अब लीए ॥

सतगुरू ने कृपा करके तुम्हारे सारे कार्य संपूर्ण कर दिए हैं और पिछले किए तुम्हारे अच्छे कर्मों के फल तम्हें लाभ देते हैं।

जन रविदास प्यास, सदा गुर नाम की ॥

हरि संग रहे प्रीत, ओट इक नाम की ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि जीव के मन में हमेशा सतगुरू के नाम की प्यास रहनी चाहिए। हरि से हमेशा प्रीति कर नाम का आश्रय लेना चाहिए।

*****

"अनमोल वचन"

(लड़की और लड़के के लिए)

प्रणवंते प्रण घड़ी, सोहाई जीओ ॥

प्रभ कृपा ते आण, मिलाई जीओ ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि हे जीव, प्रण करने का शुभ अवसर आ गया है। प्रभु की कृपा से मिलाप हुए हैं।

प्रण प्रणवंते प्रण, धारन की जीओ ॥

प्रण में एक नाम, सो ली जीओ ॥

हे जीव, ऐसा प्रण हृदय में धारण करो कि हर समय प्रभु के एक नाम का श्वास-श्वास सिमरन करना है।

पती घर पतनी, एक रसायण जीओ ॥

मात बड़ी, छोटी सम, भैण जीओ ॥

पति का घर सूझवान पत्नी से ही शोभा देता है। बड़ी स्त्री को माता समान, छोटी को बहन समान समझना चाहिए।

पती परमेश्वर, सम नहीं देव जीओ ॥

पूजन, सेवन सम, नहीं मेव जीओ ॥

पति परमेश्वर रूप समझना चाहिए, उससे बड़ा और कोई देव नहीं है। उसकी सेवा करने से ही बड़ा फल मिलता है।

पवन अगन, जल, जन हमराई जीओ ॥

सूरज, धरत, संगत, चंन अगवाई जीओ ॥

हवा, आग, जल जीव के सहायक है। सूर्य, धरती, चंद्रमा की संगति जीव का नेतृत्व कर रहे है।

बहुत जनम विछड़त, वियोग जीओ ॥

सुरत शब्द वियोग, संजोग जीओ ॥

जीव बहुत जन्मों से प्रभु से बिछुड़ कर वियोग सह रहा है। प्रभु का

स्मरण करके शब्द-सुरति का मिलाप होने से ही, वियोग समाप्त हो जाता है।

प्रण करते, प्रण तोड़, निभाओ जीओ ॥

लोक कुसंग फरक, नहीं पाओ जीओ ॥

हे प्रण करने वालो, प्रभु का सिमरन करके अपने प्रण को पूरा करना चाहिए। खोटे लोगों की संगति में जाकर, अपने प्रण में विघ्न नहीं डालना चाहिए।

जन रविदास निभउ संग, सोई जीओ ॥

गुर किरपा ते, प्राप्त होए जीओ ॥

सतगुरू रविदास महाराज जी फ़रमाते हैं, कि प्रभु ही जीव का हमेशा साथी रहता है। गुरू की कृपा से प्रभु की प्राप्ति होती है।

*****

आरती-1

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥1 ॥ रहाउ ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो
घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥1 ॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
नाम तेरे की जोति लगाई
भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥2 ॥
नामु तेरो तागा नामु फूल माला
भार अठारह सगल जूठारे ॥
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ
नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥3 ॥
दस अठा अठसठे चारे खाणी
इहै वरतणि है सगल संसारे ॥
कहै रविदास नामु तेरो आरती
सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥4 ॥3 ॥

सतगुरु रविदास जी महाराज मानवता को सभी वहम-भ्रमों से मुक्त होकर प्रभु का नाम जपने रूप सच्ची आरती करने का पावन उपदेश देते हैं।

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥1 ॥ रहाउ ॥

हे प्रभु जी ! तेरा नाम सिमरन करना ही तेरी सच्ची आरती है और आप

जी का नाम सिमरन ही आप को स्नान करवाना है। आप जी के नाम के बिना संसार के सभी पसारे (कारोबार) झूठे हैं।

नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे॥

आप जी का नाम जपना ही आरती के लिए आसन लगाना है और आप का नाम जपना ही केसर रगड़ने वाला उरसा है भाव केसर रगड़ने वाली शिला है और आप का नाम जपना ही आप पर केसर छिड़कना है।

नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो
घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे॥1॥

आप जी का नाम ही पानी है, आप जी का नाम ही चंदन है और आप जी का नाम ही चंदन रगड़कर आपको चढ़ाना है।

नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे॥

आप का नाम जपना ही आरती के लिए दीपक है,नाम रूपी बाती दीपक में डाली है और आप का नाम ही उस दीपक में डाला गया तेल है।

नाम तेरे की जोति लगाई
भइओ उजिआरो भवन सगलारे॥2॥

आप के नाम की ही ज्योति जगाई है जिस से सब भवनो भाव खण्डों-ब्रहमण्डों में आप जी के नाम का प्रकाश हो रहा है।

नामु तेरो तागा नामु फूल माला
भार अठारह सगल जूठारे॥

आप का नाम ही धागा है और आप का नाम ही फूलों की माला है। आप के नाम के बिना सारी वनस्पति के अठारह भार अपवित्र हैं।

तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ
नामु तेरा तूही चवर ढोलारे॥3॥

हे प्रभु जी आप जी की पैदा की हुई सृष्टि में मैं आपको क्या अर्पण करूँ ? आप जी का नाम ही आप जी पर चंवर झुलाना है।

दस अठा अठसठे चारे खाणी

इहै बरतणि है सगल संसारे ॥

अठारह पुराणों, अठाहट तीर्थों और चारें खाणियों (अंडज, जेरज, सेतज और उत्भुज) में सारा संसार विचर रहा है।

कहै रविदास नामु तेरो आरती

सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥4 ॥3 ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं कि हे हरि जी ! आप जी का नाम ही मेरे लिए आपकी सच्ची आरती करना है। हे हरि जी सतिनाम का ही आप जी को भोग लगाता हुँ।

****

आरती -2

आरती कहाँ लैं कर जोवै। सेवक दास अचंभो होवै ॥ टेक ॥

बावन कंचन दीप धरावै। जड़ बैराग रे दृस्टि न आवै ॥ 1 ॥

केटि भानु जा की सोभा रोमै। कहा आरती अगनी होमै ॥ 2 ॥

पाँच तत यह तिरगुनी माया। जो देखै सो सकल उपाया ॥ 3 ॥

कहै रविदास देखा हम माहीं। सकल जोति रोम सम नाहीं ॥4 ॥

सतगुरु रविदास जी महाराज, प्रभु की सच्ची आरती का गुणगान करते हैं कि उस प्रभु की ज्योति के प्रकाश की समानता, करोड़ों सूर्यों का प्रकाश भी नहीं कर सकता।

आरती कहाँ लैं कर जोवै। सेवक दास अचंभो होवै ॥ टेक ॥

हे प्रभु जी ! आप के नाम सिमरन रूपी आरती के बिना, मैंने संसार में और कोई सच्ची आरती नहीं देखी। आप के नाम के बिना, मेरे, आप के दास के लिए, सभी आडम्बर आश्चर्यजनक हैं।

बावन कंचन दीप धरावै। जड़ बैराग रे दृस्टि न आवै ॥1 ॥

चाहे कोई जीव आरती के लिए, स्वर्ण के छोटे छोटे दीये बनाए, परन्तु सच्चे वैराग्य के बिना, उस प्रभु के दर्शन नहीं होते।

कोटि भानु जाकी सोभा रोमै। कहा आरती अगनी होमै ॥2 ॥

जिस प्रभु की आरती की शोभा, करोड़ों सूर्यों से भी अधिक, प्रकाश बढ़ा रही है, तो ऐसी सच्ची आरती के लिए, अग्नि जलाकर यज्ञ करने की क्या आवश्यकता है ? भाव कोई आवश्यकता नहीं।

पाँच तत यह तिरगुनी माया। जो देखै सो सकल उपाया ॥3 ॥

यह संसार पाँच तत्त्वों-जल, वायु, अग्नि, धरती, आकाश और तीन गुण सतो-रजो-तमो से बना है। जो भी दिखाई दे रहा है, उस सब में प्रभु समाया हुआ है।

कहै रविदास देखा हम माहीं। सकल जोति रोम सम नाहीं ॥4 ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि मैंने प्रभु को, अपने भीतर से अनुभव किया है। उस प्रभु की ज्योति के एक रोम के प्रकाश के समान, संसार का सारा प्रकाश भी नहीं हो सकता।

****

आरती-3

संत उतारै आरती देव सिरोमनीये ॥
उर अंतर तहाँ पैसि बिन रसना भणिये ॥ टेक ॥
मनसा मंदिर माहिं धूप धुपइये ॥
प्रेम प्रीति की माल राम चढ़इये ॥ 1 ॥
चहु दिसि दिबला बालि जगमग ह्वै रहियो रे ॥
जोति जोति सम जोति जोति मिल रहियो रे ॥ 2 ॥
तन मन आतम बारि सदा हरि गइये ॥
भनत जन रविदास तुम सरना आइये ॥3 ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी, जीवों को प्रभु का सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं। प्रभु की नाम सिमरन रूपी आरती संत-जन गाते हैं।

संत उतारै आरती देव सिरोमनीये ॥

उर अंतर तहाँ पैसि बिन रसना भणिये ॥ टेक ॥

हे प्रभु जी ! संत, आप की नाम सिमरन रूपी, श्रेष्ठ आरती गाते हैं। हृदय में बस रहे, प्रभु का नाम संत-जन, रसना के बिना ही, अपने हृदय में उच्चारण करते हैं।

मनसा मंदिर माहिं धूप धुपइये ॥

प्रेम प्रीति की माल राम चढ़इये ॥1 ॥

अपने सुंदर मन रूपी मंदिर में, प्रभु को मिलने की आशा का ही धूप जगाते हैं और प्रभु से सच्ची प्रीति करना ही, प्रभु के आगे सच्ची माला चढ़ाना है।

चहु दिसि दिबला बालि जगमग ह्वै रहियो रे ॥

जोति जोति सम जोति जोति मिल रहियो रे ॥2 ॥

चारों दिशायों भाव हर जगह प्रभु के नाम रूपी दीपक से सारा संसार जगमगा रहा है। उस प्रभु की नाम रूपी ज्योति, अपने अंदर जगाकर, उस प्रभु की ज्योति से मिलकर (जीव रूपी ज्योति, प्रभु रूपी ज्योति का अंश है) उसका ही रूप हो जाती है।

तन मन आतम बारि सदा हरि गइये ॥

भनत जन रविदास तुम सरना आइये ॥3 ॥

अपना तन मन, प्रभु के समक्ष अर्पण कर, सदैव उसके गुण गाने चाहिए।सतगुरु रविदास महाराज जी कथन करते हैं कि हे प्रभु ! मैं आपका दास, आप जी की शरण में आया हूँ।

****

आरती-4

गगन मंडल में आरती कीजै, नाद बिंद इके मेक करीजै।

सुसमन इंदु अमृत कुंभ धरावै, मनसा माला फूल चढ़ावै ॥ 1 ॥

घीव अखंडा सोहै बाती, त्रिकुटी जोत जलै दिन राती।

पवन साधना थाल सजीजै, तामें चौमुख मन धरि लीजै ॥ 2 ॥

रवि ससि हाथ गहौं तिंह माहीं, खिन दहिने खिन बामैं लाहीं ।

सहस कंवल सिघासन राजै, अनहद झांजन नित ही बाजै ॥3 ॥

इंह बिध आरती सांची सेवा,परम पुरिख अलख अभेवा ।

कहै रविदास गुरदेव बतावै, ऐसी आरती पार लंघावै ॥ 4 ॥

इस पावन श्ब्द द्वारा सतगुरु रविदास जी महाराज जीवों को गुरु के उपदेशानुसार, दशम द्वार में ध्यान लगा कर, अनहद नाद और प्रकाश के दर्शन करने रूपी सच्ची आरती करने का, पावन उपदेश देते हैं ।

गगन मंडल में आरती कीजै, नाद बिंद इके मेक करीजै ।

सुसमन इंदु अमृत कुंभ धरावै, मनसा माला फूल चढ़ावै ॥1 ॥

दशम द्वार रूपी गगन मंडल में, ध्यान लगा कर, प्रभु की सच्ची आरती करो, जहाँ प्रभु का अनहद नाद सुनकर, जीव प्रभु से एक रूप हो जाता हैं। दशम् द्वार रुपी सुष्मना नाड़ी में, प्रभु के अमृत का कुंभ भरा पड़ा है, जहाँ प्रभु मिलाप रूपी फूलों की माला चढ़ाई जाती है ।

घीव अखंडा सोहै बाती, त्रिकुटी जोत जलै दिन राती ।

पवन साधना थाल सजीजै, तामें चौमुख मन धरि लीजै ॥2 ॥

जहाँ प्रभु के नाम का दीया बनाकर, प्रभु के नाम का घी डाल कर, बाती दीये में डाली जाती है और त्रिकुटी में, प्रभु के नाम की ज्योति निरंतर जगमगा रही है। दशम् द्वार पर, ध्यान को टिकाने रूपी साधना के लिए थाल सजाया जाता है। जहां सभी ओर से ध्यान हटा कर, प्रभु में लगाया जाता है ।

रवि ससि हाथ गहौं तिंह माहीं, खिन दहिने खिन बामैं लाहीं ।

सहस कंवल सिघासन राजै, अनहद झांजन नित ही बाजै ॥3 ॥

उस दशम द्वार में सूर्य और चन्द्रमा से असख्य गुना अधिक प्रकाश हो रहा है। जहाँ शंख के बिना ही, अनहद नाद सुनाई देता है। सहस्त्रदल कंवलों में प्रभु पातिशाह का सिंहासन है। जहाँ प्रभु के अनहद नाद के बाजे बज रहे हैं ।

इंह बिध आरती सांची सेवा, परम पुरिख अलख अभेवा ।

कहै रविदास गुरदेव बतावै, ऐसी आरती पार लंघावै ॥4 ॥

इस प्रकार प्रभु की आरती करना ही, प्रभु की सच्ची सेवा है। आरती करना ही परम पुरुष अलख और भेद रहित प्रभु की सच्ची सेवा है। सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि प्रभु की ऐसी आरती करने का, ज्ञान गुरु ही करवा सकता है। ऐसी आरती करने से जीव संसार के भव-सागर से पार हो जाता है।

****

आरती-5

आरती करत हरषै मन मेरो, आवत चित तुव रुप घनेरो ॥ टेक ॥

अजर अमर अडोल अभेस, निरगुन रहित रुप नहिं रेखा।

चेतन सत चित घन आनन्दा, निरविकार तेज अमित अभेदा ॥ 1 ॥

अनुभ अजन्मा सरबग्य अनन्ता, अभेद अदैश अबिगत सुछंदा।

नाम की बाती घीव अखंडा, इक ही जोत जलै ब्रहमंडा ॥ 2 ॥

अनत बार तोहि धियान लगावा, मुनि जनि पै पार नहिं पावा।

मन बच क्रम रविदास धियावा, घंटा झालर मनहि बजावा ॥ 3 ॥

इस पावन शब्द में, सतगुरु रविदास जी महाराज, सांसारिक जीवों को, नाम जपने रूपी सच्ची आरती करने का पावन उपदेश देते हैं।

आरती करत हरषै मन मेरो, आवत चित तुव रुप घनेरो ॥टेक ॥

हे प्रभु जी ! आप जी का नाम जपने रूपी सच्ची आरती करके, मेरा मन आनन्द से परिपूर्ण हो रहा है, जिससे मेरे हृदय में, आप जी के अनेकों रूप अनुभव हो रहे हैं।

अजर अमर अडोल अभेस, निरगुन रहित रुप नहिं रेखा।

प्रभु कभी बूढ़ा नहीं होता, हमेशा अमर है, कभी डोलता नहीं। वह प्रभु निर्गुण है, जिसका कोई रूप रंग नहीं है।

चेतन सत चित घन आनन्दा, निरविकार तेज अमित अभेदा ॥1 ॥

हे प्रभु जी ! आप चेतन, सत स्वरूप, आनन्द से भरपूर, विकार रहित, अमिट और भेद रहित हैं।

अनुभ अजन्मा सरबग्य अनन्ता, अभेद अदैश अबिगत सुछंदा।

हे प्रभु जी ! आप अनूप, जन्म रहित, सब कुछ करने योग्य, अनंत, भेद रहित, अदृश्य, अविनाशी और निर्मल स्वरुप हो।

नाम की बाती घीव अखंडा, इक ही जोत जलै ब्रहमंडा ॥2 ॥

हे प्रभु जी ! आपकी सच्ची आरती के लिए, आप के नाम की बाती और आप के नाम का घी दीये में डाला है और आप के नाम की ज्योति जगाई है, जो सारे ब्रह्मण्ड को रौशन कर रही है।

अनत बार तोहि धियान लगावा, मुनि जनि पै पार नहिं पावा।

ऋषि-मुनियों ने अनेकों बार ध्यान लगाया, परन्तु आप के आदि-अन्त को नहीं पा सके।

मन बच क्रम रविदास धियावा, घंटा झालर मनहि बजावा ॥3 ॥

सतगुरु रविदास महाराज जी प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु जी ! मन, वचन और कर्म करके, आपका ध्यान लगाने रूपी सच्ची आरती करता हूँ। जिस से मुझे अपने अन्दर ही, अनहद नाद सुनाई देता है।

*****

अरदास

।। श्लोक।।

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस।।

ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास।।

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा।।
कनक कटिक जल तरंग जैसा।।1।।
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता।।
पतित पावन नामु कैसे हुंता ।।1।।रहाउ।।
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी।।
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी।।2।।
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू।।
रविदास सम दल समझावै कोऊ।।3।।
जपो जी सतिनाम
हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे।।
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे।।1।।रहाउ।।
हरि के नाम कबीर ऊजागर।।
जनम जनम के काटे कागर।।1।।
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ।।
तउ जग जनम संकट नही आइआ।।2।।
जन रविदास राम रंगि राता।।
इउ गुर परसादि नरक नही जाता।।3।।5।।
जपो जी सतिनाम
सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के।।
चारि पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के।।1।।
हरि हरि हरि न जपहि रसना।।

अवर सभ तिआगि बचन रचना।।1।।रहाउ।।
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही।।
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही।।2।।
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी।।
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी।।3।।4।।

जपो जी सतिनाम

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।1।।रहाउ।।
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।।
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।।1।।
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै।।2।।1।।

जपो जी सतिनाम

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी।।
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी।।1।।
तु जानत मै किछु नही भव खंडन राम।।
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम।।1।।रहाउ।।
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु।।
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु।।2।।
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै।।
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै।।3।।1।।

जपो जी सतिनाम

धन्य धन्य जगतगुरू रविदास जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरू वालमीक जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरू नामदेव जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरू कबीर जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरू सैन जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरू सधना जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरू त्रलोचन जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरू बाबा फरीद जी महाराज, धन्य धन्य श्री चन्द जी महाराज, धन्य धन्य संत मीरा बाई जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरू रंका जी महाराज,

धन्य धन्य सतगुरू बंका जी महाराज, धन्य धन्य संत भिल्णी जी महाराज, सारे महापुरूशों के चरणकमलों का और सेवा सिमरण की कमाई का ध्यान धर के जपो जी सतिनाम

जगतगुरू रविदास महाराज जी के जन्म स्थान सीर गोवर्धनपुर वाराणसी, बेग़मपुरा हरिद्वार, डेरा सच्चखण्ड बल्लां सभी धर्म अस्थानों का ध्यान धर के

जपो जी सतिनाम

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै।।

बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै।।

हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने।।

कारन कवन अबोल।।रहाउ।।

बहुत जन्म बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे।।

कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइयो दरसनु देखे।।2।।1।।

धन्य धन्य जगतगुरू रविदास जी महाराज

आप जी के चरणकमलों में अरदास बेनती है जी.

आप जी की रसना के लिए प्रसाद हाज़िर है जी

कहै रविदास नामु तेरो आरती, सतिनाम है हरि भोग तुहारे।।

आप जी के नाम का भोग लगे जी प्रसाद साध संगत में वरते जी

जगत्गुरू रविदास जी महाराज आप जी के नाम की चड़दी होए कला तेरे भाणे सरबत दा भला

*****

संत सुरिन्दर दास बावा जी की प्रकाशत पुस्तिक सूची

Books published in English

- Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj ji (Steek)

Books published in Dutch

- Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj ji (Steek)dutch

Books published in hindi

- Jagatguru Ravidass Amritbani(Steek ate Sankshipt jeevan Hindi and Marathi)
- Nitnem Amritbani Jagatguru Ravidass ji(Steek)
- Jagatguru Ravidass Maharaj ji ka Sankshipt jeevan
- Jagatguru Ravidass Maharaj ji ki kathaen in Hindi and Marathu
- Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj ji (Steek)

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਪੁਸਤਕ

- ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ (ਸਟੀਕ ਅਤੇ ਸੰਖੇਪ ਜੀਵਨ)
- ਨਿਤਨੇਮ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ (ਸਟੀਕ)
- ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ (ਸਟੀਕ)
- ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਜੀਵਨ
- ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਰੱਬ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ (ਜੀਵਨ ਸਾਖੀ)
- ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਿਲੇ ਮੋਹਿ ਪੂਰੇ (ਸੰਤ ਮੀਰਾਂ ਬਾਈ ਜੀ)
- ਸੁਖਸਾਗਰ ਸਟੀਕ

****

ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਪ੍ਰਚਾਰ ਅਸਥਾਨ ਕਾਹਨਪੁਰ ਵਲੋਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਪੁਸਤਕ:-

ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦਾ ਅਨਮੋਲ ਹੀਰਾ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ :- ਕਾਂਸ਼ੀ ਰਾਮ ਕਲੇਰ

ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਸਾਹਿਤ ਸੰਸਥਾ (ਰਜਿ.) ਵੱਲੋਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਪੁਸਤਕ:-

ਚਮਾਰ ਜਾਤੀ ਇਤਿਹਾਸ ਧਰਮ ਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰ :- ਰਾਜੇਸ਼ ਕੈਂਥ ਭਬਿਆਣਵੀ

Website : www.ravidassiadharam.org
E-mail : ravidassiadharam@gmail.com
f Ravidassia Dharam Parchar Asthan Kahanpur

सबकै अचरज भया तमासा॥ जिते विप्र तिते रविदासा॥

जगतगुरू रविदास जी महाराज बैसाखी के ऐतिहासिक पर्व पर गंगा घाट पर शिला तैराते हुए।

जगतगुरू रविदास महाराज जी

सतिगुरू सरवण दास महाराज जी

30 जनवरी 2010 को श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान मंदिर सीर गोवर्धनपुर वारानसी में जगतगुरू रविदास महाराज जी, सतिगुरू सरवण दास जी और संत समाज की कृपा से 'रविदासीया धर्म' का ऐलान करते हुऐ श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी

Ravidassia Dharam Parchar Asthan

Vill. Kahanpur, P.O. Raipur Rasulpur
Distt. Jalandhar

Sant Surinder Dass Bawa Ji

Website : www.ravidassiadharam.org
E-mail : ravidassiadharam@gmail.com